विश्व स्नेह समाज

o"k 19] vad 12] flrEcj 2020

तृतीय काव्य सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 11000/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. दिए गए विषय पर आपको अपनी एच रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि रचना वाचन में अधिकतम पांच मिनट की हो.

नियम एवं शर्तेः

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।
2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.
3. प्रथम चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता तथा एक सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
4. द्वितीय चरण के लिए केवल 15 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. द्वितीय चरण के विजयी प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता तथा दो सौ रुपये की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए 11 रचनाकारों का चयन किया जाएगा. तृतीय चरण में पहुंचने वाले प्रतिभागियों को स्वयं उपस्थित होकर काव्य पाठ करना होगा। प्रथम स्थान पाने वाले प्रतिभागी को 11000/रुपये नगद एवं काव्य सम्राट की उपाधि, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र तथा शेष 08 प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाएगा। तृतीय चरण के समस्त प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता तथा तीन सौ रुपये मूल्य की पुस्तकें निःशुल्क दी जाएगी।
6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये पांच सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**
बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद**
खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः ;chvkbZ,u 0553875

विषय : पर्यावरण एवं प्रकृति

आवेदन की अंतिम तिथि 15 fnlEcj 2020

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नं०:
9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

* नियमों एवं शर्तो में आशिक परिवर्तन अनुमन्य होगा।

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः19, अंकः 10
जुलाई : 2020

इस अंक में......

LFkk;h LrEHk

हिन्दी : भारतीय अस्मिता की पहचान...... 6

प्रेमचंद का भाषा चिन्तन -------4

राजनीति के पुरोधा नारायण दत्त तिवारी..18

अपनी बातः शिक्षक और गुरु में क्या अंतर है? 04
तकनीक से आजादी 10
करोना से बर्बाद होता फिल्म संसार 12
व्यंग्यः हमारे हालात 13
रेणु और उनका गवही कौशल 19
अध्यात्मः मैं कौन हूं... 31
`dfork,@xhr@xt y% श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा, सुश्री अनुपमा प्रधान, सीता राम गुप्ता, मंजू शर्मा, डॉ0 हितेष कुमार शर्मा, ...23–24
dgkuh% रेत का महल, संकल्पदीप 20, 25
साहित्य समाचार, ...11, 33
y?k dFkk,% श्री सीताराम गुप्ता, डॉ0 सूरज मृदुल, षराफत अली खान, शबनम शर्मा 29,30
LokLF;% आयुर्वेद का चमत्कार 32

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा

lj{kd lnL;
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

प्रबंध सम्पादक
श्रीमती जया

foKkiu izc/kd
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

C;jks
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 dk0% 09335155949
b&esy% vsnehsamaj@rediffmail.com

lHkh in voSrfud gSa
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/

2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

ukV% पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

शिक्षक और गुरु में क्या अंतर है?

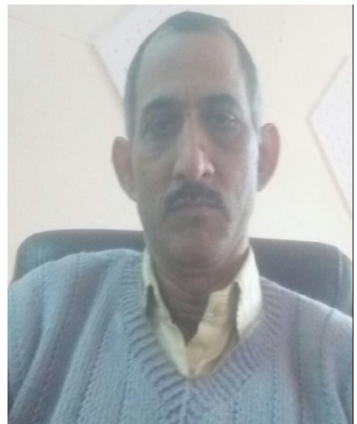

हम प्रत्येक वर्ष 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस एवं आषाढ शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा के रुप में प्रत्येक वर्ष मनाते है. शिक्षक दिवस पूर्व राष्ट्रपति डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस के अवसर पर मनाते है. दरअसल शिक्षक दिवस की शुरुआत वर्ष 1962 से हुई. एक बार छात्रों के एक समूह ने डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन से उनका जन्मदिन मनाने की अनुमति मांगी. इस पर डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा 'मेरा जन्मदिन अलग से मनाने के बजाय, 5 सितंबर को शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए तो यह मेरे सौभाग्य की बात होगी' और तभी से भारत में 5 सितंबर को षिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाने लगा.

पौराणिक गाथाओं एवं शास्त्रों की मानें तो अनेक ग्रन्थों की रचना करने वाले वेदव्यास को सभी मानव जाति का गुरु माना गया हैं. बताया जाता हैं कि आज से लगभग 3 हजार ई. पूर्व आषाढ़ माह की पूर्णिमा को महर्षि वेदव्यास का जन्म हुआ था. तब से ही उनके मान-सम्मान एवं कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु आषाढ़ शुक्ल की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा मनाई जाती हैं. भारत भर में इस दिन अधिकांश जगह लोग महर्षि वेदव्यास के चित्र का पूजन कर उनके द्वारा रचित ग्रंथो को पढ़ते हैं. गुरु पूर्णिमा को कई जगह भव्य महोत्सव के रूप में मनाते है. भारतीय संस्कृति में गुरुओं को ब्रह्माण्ड के प्रमुख देवता ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान पूज्यनीय माना गया हैं. पुराणों में कहा गया हैं की गुरु ब्रह्मा के समान हैं और मनुष्य योनि में किसी एक विशेष व्यक्ति को गुरु बनाना बेहद जरूरी हैं. क्योंकि गुरु अपने शिष्य का सर्जन करते हुए उन्हें सही राह दिखाता हैं. इसलिए गुरु पूर्णिमा के दिन बहुत से लोग अपने ब्रह्मलीन गुरु या संतो के चरण एवं उनकी चरण पादुका की पूजा अर्चना करते हैं. कुछ लोग शिक्षक और गुरु दोनों को एक मानकर चलते है. जबकि वास्तविकता इससे भिन्न है. इस संदर्भ में कुछ विद्वजनों के विचार देखिए-

'गुरु ज्ञान देता है और शिक्षक शिक्षा देता है. शिक्षा औपचारिक होती है, ज्ञान अनौपचारिक एवं प्रभु की ओर ले जाता है.' **श्रीमती दीप्ति मिश्रा,** उपकुलसचिव, प्रो० राजेन्द्र सिंह रज्जू भय्या विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ.प्र.

'गुरु नेतृत्व प्रदान करते हैं और शिक्षक हमें ज्ञान देते हैं.' **श्रीमती नाजो हातिकाकोति**-तेजपुर, सोमितपुर, असम

'गुरु किसी भी आयु में ज्ञान दे सकता है. जबकि एक शिक्षक एक सीमित विषय में सीमित समय के लिए शिक्षा प्रदान करता है.' **श्री सतीश कुमार मिश्रा**, संयुक्त सचिव, डिफेंस इम्प्लाइज यूनियन, प्रयागराज

यह कहा जा सकता है कि गुरु का क्षेत्र बहुत व्यापक एवं विस्तार को लिए हुए है जबकि शिक्षक का क्षेत्र सीमित होता है. हमारा समाज शिक्षक शब्द का अर्थ ही भूलता जा रहा है. हम अध्यापक और शिक्षक को एक ही समझने लगे हैं. एक अध्यापक शिक्षक हो सकता है, लेकिन ये जरूरी नहीं की हर अध्यापक शिक्षक हो. इस बात को समझने के लिए हमें शिक्षक, अध्यापक और गुरु जैसे शब्दों का शाब्दिक अर्थ समझना होगा. हिंदी एक अनूठी भाषा है. हम कुछ शब्दों को पर्यायवाची समझते हैं, जबकि असलियत ये है की हिंदी के हर शब्द का अर्थ अलग है. कुछ शब्द एक जैसे प्रतीत होते हैं, पर उनके असली अर्थ में कुछ बारीक फर्क जरूर होता है. जो लोग गुरु को शिक्षक समझने की भूल करते हैं, उन्हें तो अपनी शब्दावली को विकसित करने की जरूरत है.

शिक्षक : शिक्षक से हम शिक्षा प्राप्त करते हैं. शिक्षक वह व्यक्ति है जो हमें जीवन में उपयोग में आने वाली चीजें सिखाता है. इसमें व्यावहारिक ज्ञान से लेकर हमारे त्योहारों और रीती रिवाजों तक का ज्ञान शामिल होता है. इसीलिये किसी भी व्यक्ति का सबसे पहला शिक्षक उसके माता पिता व सगे सम्बन्धी होते हैं. शिक्षक हमें शिक्षा देने के बदले किसी आर्थिक लाभ की अपेक्षा नहीं रखते, बल्कि सम्मान की अपेक्षा रखते हैं.

अध्यापक : अध्यापक वह होता है जो हमें अध्ययन कराये. इसका अर्थ यह है की अध्यापक हमें किताबी ज्ञान देता है. इस तरह का ज्ञान हमें कागजी प्रमाणपत्र अर्थात डिग्री लेने में मदद करते हैं. अध्यापक किसी ऐसे संस्थान का अंग होते हैं जो हमें कागजी ज्ञान देने के बदले अध्यापक को वेतन प्रदान करता है. कुछ अध्यापक हमें शिक्षक की भूमिका निभाते हुए भी मिलते हैं जो उन्हें बाकी अध्यापकों से अलग व् बेहतर बनता है.

गुरु : गुरु वह होता है जो हमें सबसे उच्च्य कोटि का ज्ञान दे. उच्च्य कोटि के ज्ञान का अर्थ आध्यात्मिक ज्ञान. ये ज्ञान हमें एक साधारण मनुष्य से कुछ अधिक बना देता है. ये वह ज्ञान है जो हमें किसी शिक्षक या अध्यापक से प्राप्त नहीं हो सकता. एक अध्यापक या शिक्षक हमें अपने जन्म या धन से मिल सकते हैं, किन्तु एक गुरु को आपका ढूँढना व् अर्जित करना पड़ता. किसी गुरु का शिष्य बनने के लिए आपका अपनी पात्रता सिद्ध करनी पड़ती है. एक शिक्षक या अध्यापक जब आपको शिक्षा देता है हो उसके पीछे उसका कुछ स्वार्थ निहित होता है, लेकिन एक गुरु का ज्ञान निस्वार्थ होता है.

आचार्यः आचार्य वह व्यक्ति होता है जो अपने द्वारा अर्जित ज्ञान को अपने आचरण/व्यव्हार का अंग बना लेता है और फिर उस ज्ञान को अपने शिष्यों को देता है. आचार्य एक ऐसी स्तिथि है जो अध्यापक से कुछ अधिक है और गुरु से कुछ कम.

प्राचार्य : प्राचार्य आचार्य से श्रेष्ठ होता है. प्राचार्य ये सुनिश्चित करता है की जिसको वह ज्ञान दे रहा है वो भी उस ज्ञान को अपने व्यव्हार का अंग बना रहा है.

शिक्षक, गुरु, आचार्य, अध्यापक, प्राचार्य हिन्दी शब्दों की व्यापकता, इनके अंतर को समझ कर कार्य एवं व्यवहार करना उचित होगा.

(गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी)

1996 ls =ekfld ,o 2001 ls ekfld dk :i esa fujUrj izdkf'kr dy] vkt vkSj dy Hkh cgqi;kxh

विश्व स्नेह समाज हिन्दी मासिक

एक प्रति–15/रुपये, वार्षिक–150/रुपये,
पंचवर्षीय–750/रुपये, आजीवन–1500/रुपये, संरक्षकः 11000/रुपये

[kkrk /kkjd– विश्व स्नेह समाज, cSd dk uke: विजया बैंक, [kkrk la[;k–718200300000104, vkbZ,Q,llh dksM–वीजेबी0007182 सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या ह्वाट्सएप कर देवें।

पताः एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,
इलाहाबाद–211011, मो0: 9335155949, ई–मेलः
vsnehsamaj@rediffmail.com

हिन्दी : भारतीय अस्मिता की पहचान

हिन्दी एक जीवंत भाषा है. हम हिन्दी का एक शब्द बोलते हैं तो उस शब्द की प्रकृति एवं संस्कृति का समन्वयात्मक रूप मन की आँखों के सामने साकार हो उठता है.

-आचार्य बलवंत
सोनभद्र, उत्तर प्रदेश

किसी भी देश के निवासियों में राष्ट्रीय एकता की भावना के विकास और पारस्परिक सम्पर्क को बनाये रखने के लिए एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है, जिसका व्यवहार राष्ट्रीय स्तर पर किया जा सके. भारतीय जनमानस को जोड़कर रखने के लिए सम्पर्क भाषा के रूप में देश को जिस भाषा की आवश्यकता है, वह गुण हिन्दी में विद्यमान है. इसलिए कि हिन्दी किसी क्षेत्र, जाति-धर्म एवं सम्प्रदाय की भाषा न होकर भारतीय संरचना में व्याप्त राष्ट्रीय एकता की अद्भुत कड़ी के रूप में जानी जाती है.

हिन्दी, हिन्दी भाषी प्रदेशों की 24 भाषाओं एवं अनेक बोलियों से मिलकर बनी है. बोलियों के विकास एवं परिमार्जन से ही भाषा समृद्ध होती है. भाषा सामाजिकता एवं समस्त ज्ञान -विज्ञान का आधार होती हैस भारत बहुभाषी देश है. इसकी प्रादेशिक भाषाएँ हर दृष्टि से समर्थ हैं. हिन्दी समस्त भारतीय भाषाओं को जोड़ने में संयोजक की भूमिका निभा रही है. बोलियाँ उसकी ताकत हैं. कहा भी गया है कि किसी भी जीवंत भाषा के प्राण उसकी बोलियों में ही बसते हैं. हिन्दी की बोलियों में रचा बसा साहित्य हिन्दी के लिए अजस्र स्रोत की भाँति है. हिन्दी के आँचल में 18 बोलियाँ (खड़ी बोली, ब्रजभाषा, बांगरू, बुन्देली, कन्नौजी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, मैथिली, मगही, भोजपुरी, सेवाती, मालवी, अहीरवाटी, जयपुरी-हड़ौती, मेवाड़ी, मारवाड़ी, पहाड़ी (पश्चिमी, मध्य एवं पूर्वी) पली-बढ़ी एवं विकसित हुई हैं. हिन्दी एक जीवंत भाषा है. हम हिन्दी का एक शब्द बोलते हैं तो उस शब्द की प्रकृति एवं संस्कृति का समन्वयात्मक रूप मन की आँखों के सामने साकार हो उठता है. वह शब्द अकेला नहीं अपितु अपनी अर्थ संस्कृति के समस्त अलंकरणों के साथ उपस्थित होता है. भारत की तरह चीन भी बहुभाषी देश है, परन्तु उसने राष्ट्रीय भाषा का दर्जा अपने देश की सर्वमान्य भाषा मंदारिन (चीनी) को दी हैस चीन में पढ़ाई-लिखाई का माध्यम भी यही भाषा है, जबकि चीनी चित्रलिपि से विकसित विश्व की सबसे कठिन लिपियों में एक हैस एक लाख करोड़ रुपए की लागतवाली जापान की बुलेट ट्रेन की तकनीक जापानी भाषा के द्वारा ही खोजी गई है. 12 करोड़ की आबादी वाले जापान में 13 नोबेल पुरस्कार प्राप्त वैज्ञानिक हैंस रूस, चीन, जापान, अमेरिका, जर्मनी, फरांस और इजराइल जैसे दुनिया के सभी विकसित देश ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा अपनी भाषा में ही देते हैं.

भारत को अंग्रेजों से आजाद हुए 72 वर्ष से अधिक हो चुके हैं, किन्तु देश की सर्वमान्य भाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा का सम्मान अब तक नहीं प्राप्त हो सका है. अंग्रेजी मानसिकता से ग्रस्त एवं पाश्चात्य जीवन शैली से प्रभावित कुछ लोग हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की सामर्थ्य पर सवाल उठाते रहते हैं, जबकि हमने अपनी भाषा में शिक्षा प्राप्त कर विश्व को बुद्ध और महावीर दिए. चरक जैसे शरीर वैज्ञानिक और शुश्रुत जैसे शल्य चिकित्सक दिएस पाणिनि जैसा वैयाकरण, आर्यभट्ट जैसा खगोलविद, पतंजलि जैसा योग गुरु और कौटिल्य जैसा अर्थशास्त्री दिए. तक्षशिला और नालंदा जैसे विश्वविद्यालय भारतवर्ष में ही थे, जहाँ संसार के अन्य देशों के विद्यार्थी ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा ग्रहण करने आया करते थे.

भारतीय संविधान ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता प्रदान करते हुए उसके विकास सम्बन्धी अनुच्छेद 351 में कहा है, 'संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिन्दी का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्त्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी के और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहाँ आवश्यक और वांछनीय हो, वहाँ उसके शब्द भण्डार के लिए मुख्यतः संस्कृत और गौणतः अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे.'

परन्तु अंग्रेजी, अंग्रेजों के शासन काल से अब तक देश के शासन की भाषा

के रूप में भारतीय जनमानस पर अपना वर्चस्व बनाए हुए है, जबकि जनता के बोलचाल एवं व्यवहार की भाषाएँ भारतीय हैं. उच्च न्यायालय से लेकर उच्चतम न्यायालय की बहसें आज भी अंग्रेजी में होती हैं. फैसले भी अंग्रेजी में ही लिए जाते हैं. एक ऐसा देश जहाँ की बहुसंख्य जनता को न्यायालय के निर्णय को जानने-समझने के लिए वकीलों की शरण में जाना पड़ता है, जिसके लिए उन्हें भारी कीमत चुकानी पड़ती है.

राजनीतिक लाभ के लिए भाषा को लेकर भड़काऊ बातें करना तमिलनाडु के नेताओं की प्रकृति रही है. इस अहिन्दीभाषी प्रदेश में पहले से हिन्दी विरोधी आवाजें उठती रही हैं. बताते चलें कि तमिलनाडु के तत्कालीन मुख्यमंत्री गोपालाचार्य ने सन् 1936 में तमिलनाडु में हिन्दी पढ़ना अनिवार्य कर दिया था.

इन दिनों भारत में पाश्चात्य शिक्षा पद्धति पर आधारित अंग्रेजी माध्यम के विद्यालयों की बाढ़-सी आ गई हैस इन विद्यालयों की भूमिका के प्रति गहरा आक्रोश प्रकट करते हुए साहित्यकार निर्मल वर्मा जी ने कहा है, ‘क्या हम अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी शिक्षा पद्धति में ढले विद्यालयों को भंग करने का साहस रखते हैं ताकि अपनी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक मनीषा के अनुरूप भारत की युवा पीढ़ी को नये सिरे से दीक्षित किया जा सके?’ वर्मा जी ने राजनेताओं के द्वारा जाति और धर्म के नाम पर की जा रही सौदेबाजी से बचने के लिए जनता को सावधान भी किया है. उन्होंने धर्म को आस्था के स्तर पर भारतीयता की अवधारणा से जोड़ने की अपील की है, ताकि लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा हो सके. गुलामी के दिनों का स्मरण करते हुए वर्मा जी कहते हैं- ‘गुलामी में जीते हुए भी हमारे भीतर वे सभी शक्तियाँ विद्यमान थीं, जो हमें अतीत के प्रति आदर और भविष्य के प्रति आस्था से भर सकें.’’

अंग्रेजों से स्वतंत्रता के बाद प्राथमिक शिक्षा को लेकर राधाकृष्णन आयोग, मुदालियर आयोग, कोठारी आयोग एवं अन्य राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक महत्त्व की संस्थाओं ने सर्वसम्मति से यह सिफारिश की थी कि बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में ही दी जानी

विभिन्न आयोगों ने सर्वसम्मति से यह सिफारिश की थी कि बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में ही दी जानी चाहिए.

चाहिए. मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि बच्चे अपनी मातृभाषा के माध्यम से जो भी सीखते हैं, उनके मन-मस्तिष्क पर उसका गहरा प्रभाव पड़ता है. शोध से यह ज्ञात हुआ है कि किसी विद्यार्थी को विदेशी भाषा के माध्यम से पढ़ाए जाने पर विषय को समझने के बजाय रटकर याद करना पड़ता है. मौलिक चिंतन तभी सम्भव है जब शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो.

इंडियन एक्सप्रेस के अक्टूबर, सन् 2017 के अंक में छपी खबर के अनुसार भारत सरकार ने दिल्ली कार्पोरेशन के अन्तर्गत आनेवाले सभी 1700 से अधिक विद्यालयों को अंग्रेजी माध्यम से चलाने का निर्णय लिया है. इसी तरह का अलोकतांत्रिक निर्णय उत्तराखण्ड की सरकार ने अपने यहाँ के 18000 से भी अधिक विद्यालयों को अंग्रेजी माध्यम का बनाने की घोषणा करके लिया है. इन दिनों उत्तर प्रदेश सरकार भी प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों के अंग्रेजीकरण में लगी है. सरकारों के ऐसे फैसले संविधान की मूल भावना के विरूद्ध तो हैं ही, देश के 80 प्रतिशत प्रतिभावान विद्यार्थियों के मौलिक अधिकारों को छीनने जैसे हैंस देश के मुट्ठीभर लोग सत्ता पर अपना आधिपत्य बनाए रखने के लिए अंग्रेजी को हथियार के रूप में इस्तेमाल करते आ रहे हैं. हमें जब तक भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा नहीं दी जाएगी, तब तक गाँवों की दबी प्रतिभाओं के उभरने और विकास की मुख्य धारा में आने का अवसर उपलब्ध ही नहीं हो सकेगा. आजादी के 72 वर्षों के बाद भी सरकारी कार्यालयों में हिन्दी में कार्य करने की संस्कृति का अपेक्षित विकास नहीं हो सका हैस स्थिति यह है कि अंग्रेजी आज भी जन-सामान्य के मन-मस्तिष्क पर बोझ के रूप में विराजमान है. महात्मा गाँधी ने अंग्रेजी शिक्षा पद्धति को हमारी बौद्धिक चेतना के विकास में बाधक बताया थास उन्होंने हिन्दू स्वराज में लिखा था, ‘अंग्रेजी शिक्षा से द्वेष और अत्याचार बढ़े हैं. अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त लोगों ने जनता को ठगने और परेशान करने में कोई कसर नहीं रखी है. भारत को गुलाम बनाने वाले तो हम अंग्रेजी जानने वाले लोग ही हैं.’ 5 फरवरी, सन् 1916 को नागरी प्रचारिणी सभा में भाषण देते हुए गाँधीजी ने अपने 36 समर्थकों के साथ जीवनपर्यंत हिन्दी के व्यवहार की शपथ ली थी. उन्होंने स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी के प्रचार-प्रसार को एक-दूसरे का पूरक बना दिया था.

गाँधीजी ने 27 दिसम्बर, 1917 को कोलकाता में भाषा को जीवन से जोड़ने

और जनता के निकटस्थ रहने वाली चीज बताते हुए कहा था, 'यदि हम अंग्रेजी के आदी नहीं हो गये होते तो यह समझने में देर नहीं लगती कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होने से हमारी बौद्धिक चेतना जीवन से कटकर दूर हो गई हैस" गाँधीजी ने युवकों को हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी और दुनिया की दूसरी भाषाएँ भी सीखने की सलाह दी थी. एक जगह उन्होंने कहा था, 'मेरा नम्र लेकिन दृढ़ अभिप्राय है कि जब तक हम भाषा को राष्ट्रीय और अपनी प्रान्तीय भाषाओं को उनका योग्य स्थान नहीं देंगे, तब तक स्वराज की सब बातें निरर्थक हैं. प्रत्येक प्रान्त में उसी प्रान्त की भाषा तथा सारे देश के पारस्परिक व्यवहार के लिए हिन्दी और अन्तर्राष्ट्रीय उपयोग के लिए अंग्रेजी का व्यवहार होना चाहिए.''

गाँधीजी ने देश के आम आदमी की समझ में आनेवाली भाषा को अपनाने पर बल दिया और आम आदमी की समझ में आनेवाली उस भाषा को उन्होंने 'हिन्दुस्तानी' नाम से संबोधित कियास इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए उन्होंने हिन्दीतर प्रदेशों में हिन्दी के प्रचार-प्रसार का संकल्प लिया और सन् 1918 में उन्होंने अपने 18 वर्षीय पुत्र देवदास गाँधी और स्वामी सत्यदेव को हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए मद्रास भेज दियास हिन्दी के प्रचार के लिए एक कमेटी भी गठित की गयी थी, जिसके सभापति डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जी थे. गाँधीजी ने सन् 1930 में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए वर्धा में 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' की स्थापना की थी. उन्होंने भाषा के सवाल को बड़ी ही गंभीरता से लिया था. भाषा को लेकर हिन्दीभाषी प्रदेश के निवासियों की उदासीनता पर उन्होंने क्षुब्ध होकर कहा था, 'मुझे खेद है कि जिन प्रान्तों की मातृभाषा हिन्दी है, वहाँ पर भी उस भाषा की उन्नति करने का उत्साह नहीं दिखलाई देता है.'

राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन मानसिक एवं सांस्कृतिक स्वतंत्रता को स्वाधीनता से अधिक महत्त्वपूर्ण मानते थे. यह भी मानते थे कि मनुष्य की मानसिक वृत्तियों का विकास मातृभाषा के द्वारा ही सम्भव है. टंडन जी चाहते थे कि विधायिका और कार्यपालिका ही नहीं, अपितु समस्त विश्वविद्यालय एवं देश की न्यायपालिका के कामकाज भी हिन्दी में हों. हिन्दी-हिन्दुस्तानी एकता के पक्षधर जमनालाल बजाज ने मद्रास हिन्दी साहित्य सम्मलेन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए कहा था, 'हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हिन्दी ईमान की भाषा है, प्रेम की भाषा है, राष्ट्रीय एकता की भाषा है और आजादी की भाषा है. हिन्दी और उर्दू भाषा की एकता के सम्बन्ध में उन्होंने कहा था, 'हमें इस देश की भिन्न-भिन्न संस्कृतियों को एक करना है तो उसके लिए हिन्दी और उर्दू का ऐक्य होना चाहिए. इसलिए एक राष्ट्रभाषा का होना जरूरी है.' पूर्व राष्ट्रपति डाक्टर ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने देश की एकता के लिए हिन्दी की आवश्यकता को इन शब्दों में प्रकट किया है, 'मेरी राय है कि सभी राज्यों में बारहवीं कक्षा तक हिन्दी बोलना अनिवार्य कर दिया जाए, ताकि सारे लोग हिन्दी पढ़ना-लिखना सीख सकें.'

मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि बच्चे अपनी मातृभाषा के माध्यम से जो भी सीखते हैं, उनके मन-मस्तिष्क पर उसका गहरा प्रभाव पड़ता है.

राष्ट्रीय एकता के लिए डा. राममनोहर लोहिया का हिन्दी को अपनाने पर विशेष बल था. लोहियाजी कहा करते थे, 'हम समझते हैं कि अंग्रेजी के होते यहाँ ईमानदारी का आना असम्भव है' समाजवादी पार्टी के नेता मुलायम सिंह यादव ने अंग्रेजी का खुलकर विरोध करते हुए राजनेताओ से अपील की थी कि जिस भाषा में वोट माँगते हो, उसी भाषा में प्रशासनिक काम-काज भी करोस कवि 'अज्ञेय' ने बड़े दुःख के साथ कहा था, 'जब हम राजनीतिक दृष्टि से पराधीन थे तब तो हमारे पास स्वाधीन भाषा थी. अब जब हम स्वाधीन हो गये तो हमारी भाषा पराधीन हो गई.' राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि जो सरकार जनता से उसकी भाषा में संवाद नहीं करती, वह सरकार अपने उत्तरदायित्व के निर्वहन में अक्षम मानी जाती है. आपको ज्ञात होगा कि संविधान लागू होने के मात्र 15 वर्षों तक देश का कामकाज अंग्रेजी में किए जाने का प्रावधान था. उसके बाद हिन्दी को राजभाषा के रूप में पूरे देश में लागू होना था, पर तमिलनाडु के हिन्दी विरोधियों के उग्र एवं अराजक रवैये के आगे झुककर सरकार ने सन् 1963 में ही राजभाषा विधेयक पारित कर दिया, जिससे सन् 1965 के बाद भी देश में अंग्रेजी का वर्चस्व बना ही रह गया.

संवैधानिक दृष्टि से हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है किन्तु अंग्रेजी के वर्चस्व ने उसे उसके ही घर में परमुखापेक्षी बना दिया है. केंद्रीय गृह मंत्रालय ने दो राजभाषा अधिनियम बनाये थे. अधिनियम की धारा 3/1 के अधीन

हिन्दी के साथ अंग्रेजी को सहभाषा के रूप में अपनाने का निश्चय किया गया था. इसके चलते यह स्थिति बन गई कि पहले हिन्दी के साथ अंग्रेजी को जारी रखने की अवधि 15 वर्ष निश्चित की गई, किन्तु सहभाषा के रूप में इसके प्रयोग की अवधि अनिश्चितकालीन कर अंग्रेजी को अनंत काल तक बने रहने की खुली छूट दे दी गईस राजभाषा अधिनियम की धारा 3/2 के अन्तर्गत यह शर्त रख दी गई कि जब तक भारत के किसी एक भी राज्य की सरकार हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाने से इनकार कर देती है, तब तक हिन्दी संघ की राजभाषा का दर्जा नहीं प्राप्त कर सकती. राजभाषा अधिनियम 1963 के अनुसार केन्द्रीय सरकार का कामकाज अंग्रेजी में किया जा सकता है. राजभाषा नियम 1976 बनने से 'क' क्षेत्र के केन्द्रीय कार्यालयों में कामकाज केवल हिन्दी में, 'ख' क्षेत्र में हिन्दी और अंग्रेजी में तथा 'ग' क्षेत्र के राज्यों की सरकारों को पत्रादि अंग्रेजी में लिखने का प्रावधान है.

संविधान लागू होने के समय अष्टम अनुसूची में हिन्दी, संस्कृत, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, बंगाली, उड़िया, मलयालम, पंजाबी, असमिया, उर्दू एवं कश्मीरी सहित कुल 14 भाषाएँ थी. सन् 1967 में सिंधी, 1992 में कोंकणी, मणिपुरी एवं नेपाली सहित 18 हो गई. 2004 में मैथिली, बोडो, संथाली व डोगरी के सम्मिलित हो जाने से अष्टम अनुसूची में अब कुल 22 भाषाएँ हो गई है. राजनीतिक स्वार्थसिद्धि के लिए देश के कुछ राजनेता हिन्दी की बोलियों को संविधान की अष्टम अनुसूची में जगह दिलाने की कोशिश में लगे हैं. जबकि हिन्दी की किसी भी बोली को संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्मिलित करवाने की कोशिश या हिन्दी को बचाने के लिए देवनागरी लिपि के बजाय उसे रोमन लिपि में लिखने की कवायद अनुचित, अव्यावहारिक एवं हिन्दी को ही कमजोर करने जैसी है. भाषा और बोली के बीच के भेद को शब्दावली से नहीं, बल्कि लिपि के आधार पर समझा जा सकता है. हिन्दी भाषा की इन बोलियों की लिपि भी देवनागरी है और बोलियों को भाषा मान लेने पर नुकसान हिन्दी का ही होना है.

हिन्दी की किसी बोली का अष्टम अनुसूची में सम्मिलित होने के पश्चात् उसका स्वतंत्र अस्तित्व बन जाता है. वह मूल भाषा से अलग समझी जाने लगती है. हिन्दी की बोलियाँ जब तक हिन्दी के साथ हैं, तब तक उसके बोलने वालों की गणना हिन्दी के अन्तर्गत होगी. जिस दिन कोई बोली संविधान की अष्टम अनुसूची में शामिल हो जाएगी, उस दिन से उसे अपनी मातृभाषा लिखने वाले संवैधानिक रूप से हिन्दी भाषी नहीं गिने जाएंगे. आज तक अपने बोलने वालों की संख्या के बल पर ही हिन्दी राजभाषा के पद पर आरूढ़ है. भोजपुरी और राजस्थानी को संविधान की अष्टम अनुसूची शामिल करने की माँग एक दशक से उठ रही है. हिन्दी की कई बोलियों के संविधान की अष्टम अनुसूची में शामिल हो जाने से हिन्दी का संख्या बल घट रहा है. यदि यह सिलसिला यूँ ही चलता रहा तो संख्या बल की कमी के चलते एक दिन हिन्दी को देश की राजभाषा के पद से पद्च्युत होना भी पड़ सकता है. ये अंग्रेजी वाले 'बाँटो और राज करो' की आदत से बाज आने वाले नहीं हैं.

भारतीय संविधान ने भाषा से संबंधित विषयों को संविधान के अनुच्छेद 120 व 210 तथा अनुच्छेद 343 से 351 तक में वर्णित किया है. इसमें भाषा से संबंधित कुल 11 अनुच्छेद हैं. अनुच्छेद 344(1) व 351 अष्टम अनुसूची की भाषाओं की मान्यता को दर्शाते हैं. यह सुनकर हिन्दी प्रेमी आहत होंगे कि अष्टम अनुसूची में जिन 38 भाषाओं को सम्मिलित किए जाने की बात इन दिनों जोरों पर चल रही है, उसमे एक भाषा अंग्रेजी भी है और जिस दिन अंग्रेजी अष्टम अनुसूची में जगह पा गई, उस दिन संविधान के अनुच्छेद 344(1) व 351 के अनुसार भारत सरकार का संवैधानिक उत्तरदायित्व होगा कि अन्य भारतीय भाषाओं की तरह वह अंग्रेजी का भी ध्यान रखे. क्या अंग्रेजी को अष्टम अनुसूची में जगह दिलाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाने वालों को नहीं मालूम कि अंग्रेजी को संवैधानिक मान्यता दिलाना दासता की मानसिकता को दृढ़ करने जैसा है?

हिन्दी भारतीय अस्मिता की पहचान हैस राजभाषा के रूप में देश के शासकीय प्रयोजनों को सिद्ध करने के साथ राष्ट्रभाषा के रूप में देश की एकता और अखण्डता को मजबूत बनाये रखने का उत्तरदायित्व भी इसके कन्धों पर हैस इसमें देश की परम्परा, विश्वास, धर्म, संस्कृति एवं लोकनीति के स्वर समाहित हैं. हिन्दी भारतीय जनमानस के हृदय की भाषा हैस भारत का सर्वांगीण विकास हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की उन्नति के द्वारा ही सम्भव हैस

जय हिंदी!

तकनीक से आजादी

साली और साले अपने घर वालों से भी प्रिय होते है. हों भी क्यों न? आखिर वे पत्नी के बहन-भाई हैं. हम अपने आपको और अपने बहन-भाइयों को नजरअंदाज कर सकते हैं किंतु पत्नी को और उसके संबन्धियों को नजरअंदाज करना हमारे तो क्या?

-डॉ० संतोष गौड़ राष्ट्रप्रेमी

मेरे भाई के साले की मृत्यु हो गयी, मेरा भाई काफी दुःखी था. मजाक में ही सही सामान्यतः कहा जाता है कि साली और साले अपने घर वालों से भी प्रिय होते है. हों भी क्यों न? आखिर वे पत्नी के बहन-भाई हैं. हम अपने आपको और अपने बहन-भाइयों को नजरअंदाज कर सकते हैं किंतु पत्नी को और उसके संबन्धियों को नजरअंदाज करना हमारे तो क्या? हमारी रूह के भी वश की बात नहीं होती. अब ऐसी स्थिति में उसका दुखी होना लाजिमी था किंतु मेरे पिताजी ने उसके साले पर जो टिप्पणी की, वह कुछ हद तक नाराज हो गया. बात यह थी कि उसकी मृत्यु का कारण अजीबोगरीब था. उसकी मृत्यु गाने सुनने के कारण हुई थी. अब आप सोचिए गाने सुनने से भी किसी की मृत्यु हो सकती है? आप विश्वास करेंगे? किंतु आपको विश्वास करना ही होगा. सांच को आंच कहां? तथ्यों को झुठलाया नहीं जा सकता.

जी हाँ! उसकी मृत्यु गाने सुनने के कारण ही हुई थी. हाँ! यह अलग बात है कि वह गाना, रेल की पटरी पर बैठकर मोबाइल से सुन रहा था. यही नहीं मोबाइल के गाने सुनने का मजा भी पूरा अर्थात कानों में लीड लगाकर लिया जा रहा था. मजा में सजा का मुहावरा तो आपने सुना ही होगा. मजे लेंगे तो उसकी कीमत तो चुकानी ही पड़ती है. वर्तमान में खोज करने से ऐसे उदाहरण बहुतायत में मिल जायेंगे. मोबाइल की गुलामी के कारण हर वर्ष अनेकों शौकीन लोग स्वर्गवासी होने का लाभ प्राप्त करते हैं. यही नहीं, मोबाइल की कृपा से अनेकों पति-पत्नी एक-दूसरे से तलाक लेकर स्वतंत्रता के आनंद की अनुभूति करने में भी सफलता प्राप्त करते हैं.

मेरी एक सहयोगी कर्मचारी श्रीमती अनामिका जी हैं. उनको मोबाइल से इतना प्यार है कि वे जब भी नजर आती है. मोबाइल से चिपकी नजर आती हैं. कई बार मुझे लगता है कि उन्हें मोबाइल की बैटरी दिन में कितनी बार चार्ज करनी पड़ती होगी? शायद उनके मोबाइल में कोई ऐसी तकनीक हो कि बात करने से ही वह चार्ज हो जाता हो. वे कक्षा में हों, अपने परिवार के साथ हों, बाजार में हों, रास्ते में हों, किसी सभा में हों या मीटिंग में हों, वे किसी के साथ नहीं होती, केवल मोबाइल के साथ होती हैं.

कार्यस्थल पर काम, अजी क्या बात करते हो? हर समय मोबाइल पर बिजी रहना कोई कम काम है? कितनी बड़ी उपलब्धि है? किसी की क्या मजाल है, कोई उनसे बात करने के लिए भी समय ले सके. यह किसी एक महिला की कहानी नहीं हैं. केवल काल्पनिक उदाहरण मात्र है. आप अपने आसपास नजर दौड़ाएंगे तो ऐसे तकनीकी के गुलाम अनेक-महिला पुरुष नजर आ जाएंगे. वे बेचारे दया के पात्र हैं, उनका परिवार, उनके संबन्धी व उनके मित्र उनके साहचर्यगत आनंद से वंचित रह जाते हैं. अतः वे सभी दया के पात्र हैं. ऐसे महिला और पुरुषों को तकनीकी गुलामी से आजादी मिले. इस तरह की शुभकामना व्यक्त करने के सिवाय और कोई चारा हमारे पास भी नहीं है. जब तक वे आजादी नहीं चाहते , जब तक वे उस लत को पसंद करते हैं कोई उनकी आजादी को सुनिश्चित नहीं कर सकता. अब भाई कोई सो रहा हो तो उसे जगाने का प्रयत्न आप कर सकते हैं किंतु कोई बेहोश ही हो जाए, उसे कैसे जगायेंगे? उसको तो इलाज की ही आवश्यकता होती है. तकनीक के नशे की लत एक प्रकार से नसेड़ी को कोमा जाने जैसी स्थिति कर देती है. कोमा या कौना एक ही बात है.

वर्तमान समय को कलयुग कहा जाता है कल युग अर्थात कल पुर्जो का युग. सरल अर्थ में कहें तो मशीनी युग. वर्तमान में मशीन मानव पर हावी होती जा रही हैं. कई बार तो ऐसा लगता है कि हम सब मानव रूपी मशीन ही हैं. रोबोट बनाते बनाते हम स्वयं ही रोबोट बन गए हैं.

तकनीक प्रधान युग में मानव की प्रधानता के स्थान पर तकनीक स्थापित हो गयी है. वर्तमान समय में विद्यार्थी को अपने अध्यापकों से अधिक विश्वास गूगल गुरू पर है. हो भी क्यों न? अध

यापक भी अपने विद्यार्थियों को नजरअंदाज कर कक्षाओं में भी मोबाइल पर या लेपटॉप पर चिपके नजर आते हैं. यहाँ तक कि सार्वजनिक प्रार्थना सभाओं में जहाँ, सैकड़ों लोग खड़े हैं. वे सबको नजरअंदाज कर सभी को ठेंगे पर बिठाते हुए मोबाइल पर बिजी रहते हैं. कई बार तो ये लोग विभागीय औपचारिक बैठकों में विभागीय अधिकारी की उपस्थिति में भी उसको चुनौती देते हुए कि हम ऐसी मीटिंगों और ऐसे कर्मचारियों/अधिकारियों की कोई परवाह नहीं करते. कोई हमारा क्या उखाड़ लेगा? अरे भाई दुनिया! शालीनता, शिष्टाचार और हया की सीमाओं के कारण चलती है, कानून से नहीं. कानून का काम तो अपराधी को दण्डित करना है और दण्ड देना एक नकारात्मक अवधारणा है. दुनियां को सुदंर बनाने के लिए तकनीकी का प्रयोग किया जा सकता है किंतु हमें विश्लेषण यह करना है कि हम तकनीक के गुलाम तो नहीं हो गए हैं?

तकनीक से आजादी शीर्षक से लेखक का मतलब तकनीक को छोड़ देने से नहीं है. तकनीक से आजादी का मतलब यह है कि हम तकनीक का प्रयोग आवश्यकता के अनुसार करें किंतु उसकी लत में न फंस जायं. उसके गुलाम न हो जायं. अब समझने वाली बात यह है कि प्रत्येक तकनीक का आविष्कार या अनुसंधान क्या कहा जाय? मुझे नहीं मालुम किंतु जो भी हो मानव ने मानव के लिए किया है. यदि तकनीक मानव को गुलाम बनाने लगे और हम आसानी से उसकी गुलामी स्वीकार भी कर लें तो दुनिया की सुंदरता ही समाप्त हो जाएगी ना अतः आओ हम सब तकनीक से आजादी हासिल करने का संकल्प करें. हम आजाद थे, और फिर से आजादी हासिल करके रहेंगे. हम मोबाइल/ लेपटॉप/टीवी का प्रयोग अपने लिए और अपने लोगों की सुविधा के लिए करेंगे. हम किसी भी स्थिति में इनके गुलाम नहीं बनेंगे और जो गुलाम बन चुके हैं. उनका आह्वान करेंगे कि वे तकनीक से आजादी के लिए संघर्ष करें हम उनके साथ हैं. उन्हें समझायेंगे कि उनका समय उनके लिए है, उनके परिवार के लिए है, संबन्धियों के लिए है, तकनीकी की गुलामी के लिए नहीं. हम तकनीकी उपकरणों को अपने समय को बर्बादी का कारण नहीं बनने देंगे. तकनीक को हमें नियंत्रण में रखना है, तकनीक का नियंत्रण हम कभी स्वीकार नहीं करेंगे. आखिर आजादी हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है. तकनीकी की गुलामी से मुक्ति के लिए आओ हम मिलकर नारा लगाएं-

गुलामों तुम संघर्ष करो,
हम तुम्हारे साथ हैं.
तकनीकी मुर्दाबाद। मानवता जिंदाबाद।।

-'जवाहर नवोदय विद्यालय, महेंद्रगंज, दक्षिण पश्चिम गारो पहाड़ियाँ, मेघालय-७९४१०६

श्रीमती अनामिका जी को मोबाइल से इतना प्यार है कि वे हर समय मोबाइल से चिपकी नजर आती हैं. उनका मोबाइल उनके बात करने से ही चार्ज हो जाता है.

प्रविष्टियां आमंत्रित है

काव्य के क्षेत्र में: कैलाश गौतम सम्मान, स्व.किशोरी लाल सम्मान, महादेवी वर्मा सम्मान

गद्य के क्षेत्र में: डॉ. रामकुमार वर्मा सम्मान, उपेन्द्र नाथ अश्क सम्मान, हिन्दी सेवी सम्मान

समाज सेवा के क्षेत्र में: समदर्शी पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति समाज सेवी सम्मान-

अन्य: कलाश्री, राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान/राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान,

अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

अंतिम तिथि: ३० दिसम्बर २०२०

अध्यक्ष, श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास
एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, प्रयागराज-211011, उ. प्र., मो॰: 09335155949, ईमेल-psdiit@rediffmail.com

करोना से बर्बाद होता फिल्म संसार एवं विदा होते फिल्मी सितारे

-ब्रजभूषण चतुर्वेदी-बीबीसी

26 जुलाई 2020 को भारत में सिनेमा या फिल्म संसार के 125 वर्ष हो गये. इस दिन बम्बई की जहांगीर आर्ट गैलरी के काल में सिनेमा के जनक व सिनेमा व फिल्मों को भारत में लाने वाले लुमरिये ब्रदर्स (फ्रास) ने एक विशेष नाते में भारत के कुछ गिने चुने दर्शकों को अजूबे के रूप से लगातार 10 फीट तक की मूक फिल्मों के दर्शन करवाये थे. इस दिन भारत के सबसे बड़े समाचार पत्र टाईम्स ऑफ इंडिया के एक विज्ञापन में छपा था कि आज भारत में कुछ अजूबा होने वाला है जब कोई घोड़े दौड़ेंगे कारें पर्दे पर चलेंगी आदि आदि. फिर छोटी छोटी मून फिल्में फीचर मूक फिल्मों में बदलती गई 1913 में दादा साहब फालके सिनेमा के जगत में अवतरित हुये व 1951 से 2020 तक फिल्मों ने खूब रंग बदले. होटल से सिनेमा सिनेमाघरों में पहुंचा व लोकप्रियता की ऊंचाई देते हुये भारत के 135 दर्शकों का दिल जीत ले गया.

अब 2020 आया करोना ने दस्तक दी। इसमें पूर्व सिनेमा के रूप बदलते गये. किस्मत कई वर्षो से सिनेमा में बर्बादी के रूप दिखाई देने लगे. सीडी, डीबीडी, टेलीविजन आदि के साथ दैनिक मजदूरी पर कलाकारों ने अपना रूप दिखाया एवं कलाकार, संगीतकार, लेखक, गीतकार, करोड़ों के हो गये. विगत चार माह में तो फिल्म संसार की कमर ही टूट गई.

बीते कुछ वर्षों में कई फिल्मी हस्तियां इश्वर को प्यारी हो गई. एक दो वर्ष में तो राजेश कुमार, शाहरूख खान, सुनील दत्त, राजकपूर, संजीव कुमार, देवानंद, सुरैया, मधुवाला, श्रीदेवी, परवीन बाबी, साधना, कुमकुम, विश्वजीत, विमलराम, जीपी सिप्पी, ऋषि कपूर, नौशाद, रवीन्द्र जैन, चित्रगुप्त, आदि के साथ सुशांतसिंह राजपूत विदा हो गये. यानि विगत एक दो दशकों में जहां पर्दे पर कमाने वाले कलाकारों का टोटा हो गया वहीं फिल्मों की बर्बादी व सिनेमाघरों में सबकुछ लुट गया. टेक्नोलॉजी सब पर हावी हो गई व दर्शकों के परिवार भी सिनेमा से दूर हो गये. 12500 सिनेमाघरों में जब मल्टीफ्लेक्स हो गये हैं.

कलाकार, संगीतकार, लेखक, सरोजखान जैसे केरियोग्राफर विदा हो गये लेकिन पांच माह से मनोरंजन की दुनिया ही बंद हो गई. करोना बीमारी ने देश के सिनेमाकार के दरवाजे बंद कर दिये. बालीवुड में फिल्म बनना बंद हो गई. लाखों बेकार हो गये याने मनोरंजन की दुनिया ही सिमट गई. यह कैसी त्रासदी है कि मनोरंजनकारों के टीवी व मोबाईल पर सिमट गया.

मैंने लगभग 70 वर्षो से सिनेमा पर भरपूर लिखा है अच्छी फिल्में जैसे आवारा, मदर इंडिया, पाकीजा, प्यासा, नागिन, शोले, अनेकों धार्मिक व सामाजिक फिल्में देखी लेकिन अब कहां वे फिल्में व कहां है उनके कलाकार व कद्रदान. यानि सब कुछ बर्बाद हो

गया. कहां से लायेंगे गुरूदत्त, राजकपूर को। कहां ढूंढ़ेगे सुनेगे सिनेमा के मधुर संगीत को. चार पांच सुपर स्टार बचे है. अजय कुमार, अमीर खान, अमिताभ बच्चन, अक्षय कुमार, अजय देवगन ही दिख रहे हैं व उनके भाव बहुत ज्यादा हैं कि छोटे फोटो निर्माता लोगों तक पहुंचाया पाते है.

इस दौर की सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि फिल्म वितरण कार्यालय लगभग बंद है. खत्म हो गये प्रदर्शन केडि याने सिनेमाघर सिनेमा थियेटर तो खत्म हो गये. शहर गांव के सिनेमा से मनोरंजन लापता हो गये. लगता है सिनेमा कला ही भारत में अंतिम सांसे गिन रही है. 2020 में करोना ने मनोरंजन को ही मार दिया. सिर्फ बातों व गासिप ही बचा है. यानि यह वर्ष सिनेमा के लिये व फिल्मों के लिये काला वर्ष हो गया. भारी भरकम मनोरंजन कर खतम हो गया. सरकारों को करोड़ों का घाटा, दर्षकों में उदासीनता, सिर्फ टेलीविजन ही या सिर्फ मोबाईल ही मनोरंजन का केन्द्र बचे हैं.

कलाकारों, संगीतकारों, केरियोग्राफरों लेखकों व अच्छे रूप में प्रभाव हो गया एवं कला के नाम पर पापुलर कलाकार 20–30–50 करोड़ सपने अपना पारिश्रमिक मांगने लगे चाहे जो फिल्म बनने लगी. अतः मुझे लगता है कि 125 वर्ष का सिनेमा रसालत की और जा रहा है. कैसे मनोरंजन की दुनिया कभी खतम नहीं होगी लेकिन ग्लेमर का भर संसार अपनी चमन दमक खो चुका है यह तो मानना ही पड़ेगा. लगता है मनोरंजन के अच्छा दिन आवे व जनता को सस्ता मनोरंजन मिले प्रभु से हम यही कामना करें.

-वरिष्ठ पत्रकार फिल्म लेखन
301, प्रभात रेसीडेंसी, तिलकपथ मेन रोड, इन्दौर-452007

व्यंग्य

हमारे हालात

हम स्वदेशी व देशभक्ति के नाम पर गोबर भी सोने की कीमत में खरीद लेते हैं. दुनिया में किसानों को सबसे ज्यादा सब्सिडी देने वाला देश अमरीका है और किसानों का सबसे ज्यादा तेल निकालने वाला देश हमारा अपना भारत है.

-मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

आप यकीन नहीं करेंगे. दुनियां के कुछ अन्य देशों का कुल बजट होता है, उतना खर्च तो भारत के नेता लोगों के समोसों के लिए निकलता है. फिर इस देश के आम जनमानस चाहें भूखा मरे, नंगा रहे, कोई फर्क नहीं पड़ता. आप आश्चर्य करेंगे, जितने लोग किसी छोटे-मोटे युद्ध में मरते हैं, उतने तो हमारे किसान आत्महत्या कर लेते है. हमारे यहाँ युवाशक्ति निठ्ठली घूम रही है और बूढ़े खूसट मंत्री जो ठीक से सांस भी नहीं ले पा रहे वे कोई रक्षा मंत्री, विदेश मंत्री, शिक्षा मंत्री बने बिस्तर पर पड़े-पड़े खांस रहे हैं.

हमें कोई देशभक्ति, स्वदेशी की शिक्षा कतई न दे. हम स्वदेशी व देशभक्ति के नाम पर गोबर जैसी चीज भी सोने जैसी मंहगी धातु की कीमत में खरीद लेते हैं. उदाहरण के तौर पर रामदेव के उत्पाद. दुनिया में किसानों को सबसे ज्यादा सब्सिडी देने वाला देश अमरीका है और किसानों का सबसे ज्यादा तेल निकालने वाला देश हमारा अपना भारत है.

जिस तरह स्वर्ग सब जाना चाहते हैं पर मरना कोई नहीं चाहता, उसी तरह भ्रष्टाचार से सब पीडित हैं पर भ्रष्टाचार सब कर रहे हैं. जिसकी जैसी औकात उसी के अनुसार. अभी हाल ही में मैं फतेहाबाद तहसील कोर्ट में किसी काम से गया था. वहाँ कोर्ट का एक कर्मचारी लोगों से मांग-मांगकर चाय पीता, गुटखा खाता, सिगरेट पीता मैंने देखा. उसके बारे में पता लगाया तो मालुम पड़ा महाशय को पचास-साठ हजार प्रतिमाह मिलते हैं और ऊपरी कमाई सहित एक लाख से ऊपर महीना निकल जाता है. उसकी कमाई सुनकर मेरा पसीना छूट गया. लेकिन उसकी भेष-भूसा, रहन-सहन देखकर आप अनुमान नहीं लगा सकते कि यह हमारे देश का छोटा अम्बानी है.

इस देश की सरकारों से आम जनमानस की भलाई वाली नितियों के बारे में कार्य हमेशा कछुए वाली चाल में होता है. कमाल की बात यह है कि अभी हाल ही में बेमौसम बारिश और आंध ी ओलों से काफी फसलें नष्ट हो गईं, तो किसानों के मुआवजे का ऐलान किया गया. अफवाह फैली कि फैलाई गई, जिन्होंने बैंकों से ऋण लिया है वे ही किसान हैं बाकी तो मुकेश अम्बानी के फूफा हैं. हालांकि बाद में सुधार कर लिया गया था. परन्तु इस अफवाह की वजह से बहुत से छोटे किसान सरकार से मुआवजा लेने से चूक गये कुलमिलाकर हम आज जिन हालातों में जी रहे हैं, उन हालातों के जिम्मेवार हम स्वयं ही हैं.

-ग्राम रिहावली, डाक तारौली,
फतेहाबाद, आगरा 283111

पुण्य तिथि पर विशेष

प्रेमचंद का भाषा चिन्तन

देश की राष्ट्रभाषा के आदर्श रूप का सर्वोत्तम उदाहरण प्रेमचंद की भाषा है. प्रेमचंद का भाषा-चिन्तन जितना तार्किक और पुष्ट है उतना किसी भी भारतीय लेखक का नहीं है.

-प्रो. अमरनाथ

आज भी प्रेमचंद (31.7.1880–8.10. 1936) सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले हिन्दी के लेखकों में हैं. बड़े-बड़े विद्वानों के निजी पुस्तकालयों से लेकर रेलवे स्टेशनों के बुक स्टाल तक प्रेमचंद की किताबें मिल जाती है. प्रेमचंद की इस लोकप्रियता का एक कारण उनकी सहज सरल भाषा भी है. किन्तु मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि जहाँ विभिन्न विश्वविद्यालयों और शिक्षण संस्थाओं की ओर से प्रेमचंद के साहित्य पर अनेक संगोष्ठियाँ आयोजित होती रहती हैं वहीं उनके भाषा चिन्तन पर कहीं किसी संगोष्ठी के आयोजन की खबर सुनने में नहीं आती. आज भी कहा जा सकता है कि इस देश की राष्ट्रभाषा के आदर्श रूप का सर्वोत्तम उदाहरण प्रेमचंद की भाषा है. प्रेमचंद का भाषा-चिन्तन जितना तार्किक और पुष्ट है उतना किसी भी भारतीय लेखक का नहीं है. 'साहित्य का उद्देश्य' नाम की उनकी पुस्तक में भाषा-केंन्द्रित उनके चार लेख संकलित हैं जिनमें भाषा संबंधी सारे सवालों के जवाब मिल जाते हैं. इन चारो लेखों के शीर्षक है, 'राष्ट्रभाषा हिन्दी और उसकी समस्याएं', 'कौमी भाषा के विषय में कुछ विचार', 'हिन्दी-उर्दू की एकता' तथा 'उर्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तानी'. 'कौमी भाषा के विषय में कुछ विचार' शीर्षक निबंध वास्तव में बम्बई में सम्पन्न राष्ट्रभाषा सम्मेलन में स्वगताध्यक्ष की हैसियत से 27 अक्टूबर 1934 को दिया गया उनका व्याख्यान है. इसमें वे लिखते है, 'समाज की बुनियाद भाषा है. भाषा के बगैर किसी समाज का खयाल भी नहीं किया जा सकता. किसी स्थान की जलवायु, उसके नदी और पहाड़, उसकी सर्दी और गर्मी और अन्य मौसमी हालातें, सब

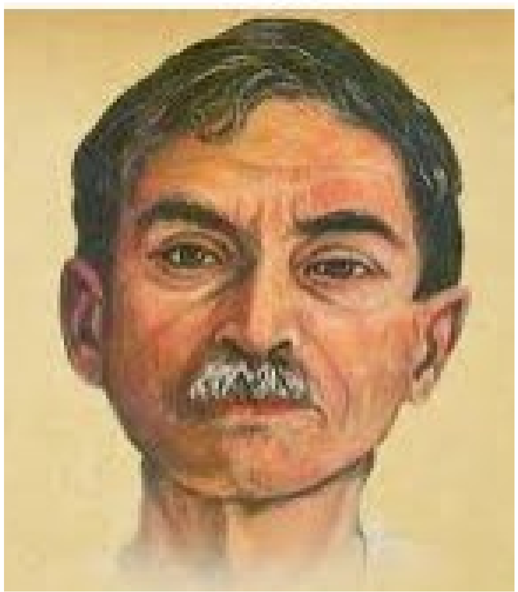

मिल-जुलकर वहां के जीवों में एक विशेष आत्मा का विकास करती हैं, जो प्राणियों की शक्ल-सूरत, व्यवहार, विचार और स्वभाव पर अपनी छाप लगा देती हैं और अपने को व्यक्त करने के लिए एक विशेष भाषा या बोली का निर्माण करती हैं. इस तरह हमारी भाषा का सीधा संबंध हमारी आत्मा से हैं. राजनीतिक, व्यापारिक या धार्मिक नाते जल्द या देर में कमजोर पड़ सकते हैं और अक्सर बदल जाते हैं. लेकिन भाषा का रिश्ता समय की, और दूसरी विखरने वाली शक्तियों की परवाह नहीं करता और इस तरह से अमर हो जाता है. (साहित्य का उद्देश्य, पृष्ठ-118)

पिछले कुछ वर्षो से बोली और भाषा के रिश्ते को लेकर बहुत बाद-विवाद चल रहा है. भोजपुरी, राजस्थानी, छत्तीसगढ़ी आदि कुछ हिन्दी की बोलियां हिन्दी परिवार से अलग होकर संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल होने की माँग कर रही हैं. इस संबंध को लेकर प्रेमचंद लिखते हैं, 'जैसे जैसे सभ्यता का विकास होता जाता है, यह स्थानीय भाषाएं किसी सूबे की भाषा में जा मिलती हैं और सूबे की भाषा एक सार्वदेशिक भाषा का अंग बन जाती हैं. हिन्दी ही में ब्रजभाषा, बुन्देलखंडी, अवधी, मैथिल, भोजपुरी आदि भिन्न-भिन्न शाखाएं हैं, लेकिन जैसे छोटी-छोटी धाराओं के मिल जाने से एक बड़ा दरिया बन जाता है, जिसमें मिलकर नदियाँ अपने को खो देती हैं, उसी तरह ये सभी प्रान्तीय भाषाएं हिन्दी की मातहत हो गयी हैं और आज उत्तर भारत का एक देहाती भी हिन्दी समझता है और अवसर पड़ने पर बोलता है. लेकिन हमारे मुल्की फैलाव के साथ हमें एक ऐसी भाषा की जरूरत पड़ गयी है जो सारे हिन्दुस्तान में समझी और बोली जाय, जिसे हम हिन्दी या गुजराती या

मराठी या उर्दू न कहकर हिन्दुस्तानी भाषा कह सकें, जैसे हर एक अंग्रेज या जर्मन या फ्रांसीसी फ्रेंच या जर्मन या अंग्रेजी भाषा बोलता और समझता है. हम सूबे की भाषाओं के विरोधी नहीं हैं. आप उनमें जितनी उन्नति कर सकें करें. लेकिन एक कौमी भाषा का मरकजी सहारा लिए बगैर एक राष्ट्र की जड़ कभी मजबूत नहीं हो सकती." (वही, पृष्ठ-121)

प्रेमचंद चिन्ता व्यक्त करते हैं, 'अंग्रेजी राजनीति का, व्यापार का, साम्राज्यवाद का हमारे ऊपर जैसा आतंक है, उससे कहीं ज्यादा अंग्रेजी भाषा का है. अंग्रेजी राजनीति से, व्यापार से, साम्राज्यवाद से तो आप बगावत करते हैं लेकिन अंग्रेजी भाषा को आप गुलामी के तौक की तरह गर्दन में डाले हुए हैं. अंग्रेजी राज्य की जगह आप स्वराज्य चाहते हैं. उनके व्यापार की जगह अपना व्यापार चाहते हैं, लेकिन अंग्रेजी भाषा का सिक्का हमारे दिलों पर बैठ गया है. उसके बगैर हमारा पढ़ा-लिखा समाज अनाथ हो जाएगा.' (वही, पृष्ठ-121) प्रेमचंद अंग्रेजी जानने वालों और अंग्रेजी न जानने वालों के बीच स्तर-भेद का तार्किक विवेचन करते हुए कहते हैं," पुराने समय में आर्य और अनार्य का भेद था, आज अंग्रेजीदाँ और गैर-अंग्रेजीदाँ का भेद है. अंग्रेजीदाँ आर्य हैं. उसके हाथ में अपने स्वामियों की कृपादृष्टि की बदौलत कुछ अख्तियार है, रोब है, सम्मान है. गैर-अंग्रेजीदाँ अनार्य हैं और उसका काम केवल आर्यों की सेवा-टहल करना है और उसके भोग-विलास और भोजन के लिए सामग्री जुटाना है. यह आर्यवाद बड़ी तेजी से बढ़ रहा है, दिन दूना रात चौगुना...हिन्दुस्तानी साहबों की अपनी विरादरी हो गयी है, उनका रहन-सहन, चाल-ढाल, पहनावा, बर्ताव सब साधारण जनता से अलग है, साफ मालूम होता है कि यह कोई नई उपज है.' (वही, पृष्ठ-122) प्रेमचंद हमें आगाह करते हैं, जबान की गुलामी ही असली गुलामी है. ऐसे भी देश, संसार में हैं जिन्होंने हुक्मराँ जाति की भाषा को अपना लिया. लेकिन उन जातियों के पास न अपनी तहजीब या सभ्यता थी और न अपना कोई इतिहास था, न अपनी कोई भाषा थी. वे उन बच्चों की तरह थे, जो थोड़े ही दिनों में अपनी मातृभाषा भूल जाते हैं और नयी भाषा में बोलने लगते हैं. क्या हमारा शिक्षित भारत वैसा ही बालक है? ऐसा मानने की इच्छा नहीं होती, हालाँकि लक्षण सब वही हैं. (वही, पृष्ठ-124)

कौमी भाषा के स्वरूप पर प्रेमचंद ने बहुत गंभीरता के साथ और तर्क व उदाहरण देकर विचार किया है. वे कहते हैं, 'सवाल यह होता है कि जिस कौमी भाषा पर इतना जोर दिया जा रहा है, उसका रूप क्या है? हमें खेद है कि अभी तक उसकी कोई खास सूरत नहीं बना सके हैं, इसलिए कि जो लोग उसका रूप बना सकते थे, वे अंग्रेजी के पुजारी थे और हैं. मगर उसकी कसौटी यही है कि उसे ज्यादा से ज्यादा आदमी समझ सकें. हमारी कोई सूबेवाली भाषा इस कसौटी पर पूरी नही उतरती. सिर्फ हिन्दुस्तानी उतरती है, क्योंकि मेरे ख्याल में हिन्दी और उर्दू दोनो एक जबान है. क्रिया और कर्ता, फेल और फाइल जब एक है तो उनके एक होने में कोई संदेह नहीं हो सकता. उर्दू वह हिन्दुस्तानी जबान है, जिसमें फारसी-अरबी के लफ्ज ज्यादा हों, इसी तरह हिन्दी वह हिन्दुस्तानी है, जिसमें संस्कृत के शब्द ज्यादा हों. लेकिन जिस तरह अंग्रेजी में चाहे लैटिन या ग्रीक शब्द अधिक हों या ऐंग्लोसेक्सन, दोनो ही अंग्रेजी है, उसी भाँति हिन्दुस्तानी भी अन्य भाषाओं के शब्दों में मिल जाने से कोई भिन्न भाषा नहीं हो जाती. साधारण बातचीत में तो हम हिन्दुस्तानी का व्यवहार करते ही हैं.' (वही, पृष्ठ-124)

प्रेमचंद हमें आगाह करते हैं, जबान की गुलामी ही असली गुलामी है. हिन्दुस्तानी का एक उदाहरण 'एक जमाना था, जब देहातों में चरखा और चक्की के बगैर कोई घर खाली न था. चक्की-चूल्हे से छुट्टी मिली, तो चरखे पर सूत कात लिया. औरतें चक्की पीसती थी. इससे उनकी तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी रहती थी, उनके बच्चे मजबूत और जफाकश होते थे.

प्रेमचंद ने उर्दू, हिन्दी और हिन्दुस्तानी, भाशा के तोनों रूपों का अलग अलग उदाहरण दिया है. उनके द्वारा दिया गया हिन्दुस्तानी का उदाहरण निम्न है, 'एक जमाना था, जब देहातों में चरखा और चक्की के बगैर कोई घर खाली न था. चक्की-चूल्हे से छुट्टी मिली, तो चरखे पर सूत कात लिया. औरतें चक्की पीसती थी. इससे उनकी तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी रहती थी, उनके बच्चे मजबूत और जफाकश होते थे. मगर अब तो अंग्रेजी तहजीब और मुआशरत ने सिर्फ शहरों में ही नहीं,

देहातों में भी कायापलट दी है. हाथ की चक्की के बजाय अब मशीन का पिसा हुआ आटा इस्तोमाल किया जाता है. गावों में चक्की न रही तो चक्की पर का गीत कौन गाए? जो बहुत गरीब हैं वे अब भी घर की चक्की का आटा इस्तेमाल करते हैं. चक्की पीसने का वक्त अमूमन रात का तीसरा पहर होता है. सरे शाम ही से पीसने के लिए अनाज रख लिया जाता है और पिछले पहर से उठकर औरतें चक्की पीसने बैठ जाती हैं.'

उक्त उदाहरण देने के बाद प्रेमचंद लिखते हैं, 'इस पैराग्राफ को मैं हिन्दुस्तानी का बहुत अच्छा नमूना समझता हूँ, जिसे समझने में किसी भी हिन्दी समझने वाले आदमी को जरा भी मुश्किल न पड़ेगी.' (वही, पृष्ठ-125)

किन्तु प्रेमचंद अपने समय के यथार्थ को भली-भाँति समझते थे. उन्होंने लिखा है, 'एक तरफ हमारे मौलवी साहबान अरबी और फारसी के शब्द भरते जाते है, दूसरी ओर पंडितगण, संस्कृत और प्राकृत के शब्द ठूँस रहे है और दोनो भाषाएं जनता से दूर होती जा रही हैं. हिन्दुओं की खासी तादाद अभी तक उर्दू पढ़ती आ रही है, लेकिन उनकी तादाद दिन प्रति -दिन घट रही है. मुसलमानों ने हिन्दी से कोई सरोकार रखना छोड़ दिया. तो क्या यह तै समझ लिया जाय कि उत्तर भारत में उर्दू और हिन्दी दो भाषाएं अलग-अलग रहेंग? उन्हें अपने-अपने ढंग पर, अपनी-अपनी संस्कृति के अनुसार बढ़ने दिया जाय. उनको मिलने की और इस तरह उन दोनों की प्रगति को रोकने की कोशिश न की जाय? या ऐसा संभव है कि दोनो भाषाओं को इतना समीप लाया जाय कि उनमें लिपि के सिवा कोई भेद न रहे. बहुमत पहले निश्चय की ओर है. हाँ, कुछ थोड़े से लोग ऐसे भी है जिनका ख्याल है कि दोनो भाषाओं में एकता लायी जा सकती है और इस बढ़ते हुए फर्क को रोका जा सकता है. लेकिन उनका आवाज नक्कारखाने में तूती की आवाज है. ये लोग हिन्दी और उर्दू नामों का व्यवहार नहीं करते, क्योंकि दो नामों का व्यवहार उनके भेद को और मजबूत करता है. यह लोग दोनों को एक नाम से पुकारते हैं और वह हिन्दुस्तानी है.' (वही, हिन्दी-उर्दू एकता शीर्षक निबंध, पृष्ठ-139)

इस संबंध में महात्मा गाँधी की प्रशंसा करते हुए प्रमचंद ने लिखा है, 'कितने खेद की बात है कि महात्मा गाँधी के सिवा किसी भी दिमाग ने कौमी भाषा की जरूरत नहीं समझी और उस पर जोर नहीं दिया. यह काम कौमी सभाओं का है कि वह कौमी भाषा के प्रचार के लिए इनाम और तमगे दें, उसके लिए विद्यालय खोलें, पत्र निकालें और जनता में प्रोपेगैंडा करें.

कहना न होगा, प्रेमचंद द्वारा प्रस्तावित हिन्दुस्तानी को नकार कर और संस्कृतनिष्ठ हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाने के 70 साल बाद भी, प्रेमचंद द्वारा दिए गए उक्त उद्धरण में सिर्फ दो शब्द (जफाकश और मुआशरत) ऐसे हैं जिनको लेकर हिन्दी वालों की थोड़ी मुश्किल हो सकती है. किन्तु भाषा की सरलता आज भी विमुग्ध करने वाली है. प्रेमचंद और गाँधीजी के सुझाव न मानकर हमने एक ही भाषा को हिन्दी और उर्दू में बाँट दिया, उन्हें मजहब से जोड़ दिया और इस तरह दुनिया की सबसे समृद्ध, बड़ी और ताकतवर हिन्दी जाति को धर्म के आधार पर दो हिस्सों में बाँटकर कमजोर कर दिया और उनके बीच सदा-सदा के लिए अलंघ्य और अटूट चौड़ी दीवार खड़ी कर दी.

हमने राजभाषा हिन्दी और अपने साहित्य की भाषा को भी जिस संस्कृतनिष्ठता से बोझिल बना दिया है उससे आगाह करते हुए प्रेमचंद ने उसी समय कहा था, 'हिन्दी में एक फरीक ऐसा है, जो यह कहता है कि चूंकि हिन्दुस्तान की सभी सूबेवाली भाषाएं संस्कृत से निकली हैं और उनमें संस्कृत के शब्द अधिक हैं इसलिए हिन्दी में हमें अधिक से अधिक संस्कृत के शब्द लाने चाहिए, ताकि अन्य प्रान्तों के लोग उसे आसानी से समझें. उर्दू की मिलावट करने से हिन्दी का कोई फायदा नहीं. उन मित्रों को मैं यही जवाब देना चाहता हूं कि ऐसा करने से दूसरे सूबों के लोग चाहे आप की भाषा समझ लें, लेकिन खुद हिन्दी बोलने वाले न समझेंगे. क्योंकि, साधारण हिन्दी बोलने वाला आदमी शुद्ध संस्कृत शब्दों का जितना व्यवहार करता है उससे कहीं ज्यादा फारसी शब्दों का. हम इस सत्य की ओर से आँखें नहीं बन्द कर सकते और फिर इसकी जरूरत ही क्या है कि हम भाषा को पवित्रता की धुन में तोड़-मरोड़ डालें. यह जरूर सच है कि बोलने की भाषा और लिखने की भाषा में कुछ न कुछ अन्तर होता है, लेकिन लिखित

भाषा सदैव बोलचाल की भाषा से मिलते-जुलते रहने की कोशिश किया करती है. लिखित भाषा की खूबी यही है कि वह बोलचाल की भाषा से मिले.' (वही, पृष्ठ 128)

इस संबंध में महात्मा गाँधी की प्रशंसा करते हुए प्रमचंद ने लिखा है, 'कितने खेद की बात है कि महात्मा गाँधी के सिवा किसी भी दिमाग ने कौमी भाषा की जरूरत नहीं समझी और उस पर जोर नहीं दिया. यह काम कौमी सभाओं का है कि वह कौमी भाषा के प्रचार के लिए इनाम और तमगे दें, उसके लिए विद्यालय खोलें, पत्र निकालें और जनता में प्रोपेगैंडा करें. राष्ट्र के रूप में संघटित हुए बगैर हमारा दुनिया में जिन्दा रहना मुश्किल है. यकीन के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता कि इस मंजिल पर पहुँचने की शाही सड़क कौन सी है. मगर दूसरी कौमों के साथ कौमी भाषा को देखकर सिद्ध होता है कि कौमियत के लिए लाजिमी चीजों में भाषा भी है और जिसे एक राष्ट्र बनना है उसे एक कौमी भाषा भी बनानी पड़ेगी.' (वही, पृष्ठ-132)

प्रेमचंद ने लिपि के सवाल पर भी गंभीरता के साथ विचार किया है और साफ शब्दों में अपना मत व्यक्त किया है. 'प्रान्तीय भाषाओं को हम प्रान्तीय लिपियों में लिखते जायँ, कोई एतराज नहीं, लेकिन हिन्दुस्तानी भाषा के लिए एक लिपि रखना ही सुविधा की बात है, इसलिए नहीं कि हमें हिन्दी लिपि से खास मोह है बल्कि इसलिए कि हिन्दी लिपि का प्रचार बहुत ज्यादा है और उसके सीखने में भी किसी को दिक्कत नहीं हो सकती. लेकिन उर्दू लिपि हिन्दी से बिलकुल जुदा है और जो लोग उर्दू लिपि के आदी हैं, उन्हें हिन्दी लिपि का व्यवहार करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता. अगर जबान एक हो जाय तो लिपि का भेद कोई महत्व नहीं रखता.' (वही, पृष्ठ-132) और अन्त में निष्कर्ष देते हैं, 'लिपि का फैसला समय करेगा. जो ज्यादा जानदार है वह आगे आएगी. दूसरी पीछे रह जाएगी. लिपि के भेद का विषय छेड़ना घोड़े के आगे गाड़ी को रखना होगा. हमें इस शर्त को मानकर चलना है कि हिन्दी और उर्दू दोनो ही राष्ट्र-लिपियां हैं और हमें अख्तियार है, हम चाहे जिस लिपि में उसका (हिन्दुस्तानी का) व्यवहार करें. हमारी सुविधा हमारी मनोवृत्ति और हमारे संस्कार इसका फैसला करेंगे.' (वही, पृष्ठ-133) किन्तु प्रेमचंद को विश्वास है कि 'हम तो केवल यही चाहते हैं कि हमारी एक कौमी लिपि हो जाय.' दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास के चतुर्थ दीक्षान्त समारोह में दीक्षान्त भाषण देते हुए उन्होंने कहा था कि ' अगर सारा देश नागरी लिपि का हो जाएगा तो संभव है मुसलमान भी उस लिपि को कुबूल कर लें. राष्ट्रीय चेतना उन्हें बहुत दिन तक अलग न रहने देगी.' (साहित्य का उद्देश्य, पृष्ठ-117) प्रेमचंद के सुझावों पर अमल न करके हमने देश की भाषा नीति को लेकर जो मार्ग चुना उसके घातक परिणाम आज हमारे सामने हैं. अंग्रेजी के वर्चस्व के नाते हमारे देश की बहुसंख्यक आबादी और गाँवों की छुपी हुई प्रतिभाएं अनुकूल अवसर के अभाव में दम तोड़ रही हैं. देश में मौलिक चिन्तन चुक गया है और दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने के बावजूद हम सिर्फ नकलची बनकर रह गए हैं.

बहरहाल, आज कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की जयंती के दिन हम इस महान लेखक के रचनात्मक योगदान तथा उनके भाषा संबंधी चिन्तन का स्मरण करते हैं और समाज के प्रबुद्ध जनों से उसपर अमल करने की अपील करते करते हैं.

(लेखक कलकत्ता विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर और हिन्दी विभागाध्यक्ष हैं)

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1-प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर 2. बिक्री की व्यवस्था
3-प्रचार-प्रसार की व्यवस्था 4-विमोचन की व्यवस्था
5- ऑन लाईन संस्करण में पुस्तक का प्रकाशन

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें
प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011ई—मेलः
sahityaseva@rediffmail.com

राजनीति के पुरोधा नारायण दत्त तिवारी

--डॉ.आई.ए.मंसूरी शास्त्री

नारायण दत्त तिवारी का जन्म नैनीताल जिले के बलूती गांव में 18 अक्टूबर 1925 को पूर्णानन्द तिवारी के यहां हुआ था। तब उत्तर प्रदेश का गठन नहीं हुआ था और ये हिस्सा 1937 के बाद भारत के यूनाइटेड प्रोविंस के तौर पर जाना जाता था. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान लागू होने पर इसे उत्तर प्रदेश का नाम मिला. इनके पिता पूर्णनन्द तिवारी वन विभाग में अधिकारी थे. महात्मा गांधी के 1942 में असहयोग आन्दोलन के आहवान पर पूर्णानन्द तिवारी ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और आन्दोलन में शामिल हो गये. नारायण दत्त तिवारी की आरंभिक शिक्षा हल्द्वानी, बरेली और नैनीताल में हुई. अपने पिता के तबादले के कारण इन्हें एक दूसरे शहर में रहते हुए अपनी पढ़ाई पूरी करनी पड़ी. अपने पिता की तरह ही ये भी स्वतंत्रता की लड़ाई में शामिल हुए. 1942 में ये ब्रिटिश सरकार की साम्राज्यवादी नीतियों के खिलाफ नारे व पोस्टर और पम्पलेट छापने और उसमें सहयोग करने के आरोप में पकड़े गये. इन्हें गिरफ्तार कर नैनीताल जेल में डाल दिया गया, जहां इनके पिता पूर्णानन्द तिवारी पहले से ही बन्द थे. 15 महिने की जेल काटने के बाद 1944 में इन्हें रिहा किया गया. बाद में इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से राजनीति शास्त्र से प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण की. इसके बाद इन्होंने इसी विश्वविद्यालय से एल.एल.बी. की डिग्री भी हासिल की. 1947 में आजादी के साल ही ये इस विश्वविद्यालय में छात्र यूनियन के अध्यक्ष चुने गय. यह इनके राजनीतिक जीवन की पहली सीढ़ी थी.

आजादी के बाद 1950 में उत्तर प्रदेश के गठन और 1951–52 में प्रदेश के पहले विधान सभा चुनाव में तिवारी ने नैनीताल (उत्तर प्रदेश) से प्रजा समाजवादी पार्टी के उम्मीदवार के रूप में हिस्सा लिया. कांग्रेस की हवा होने के बावजूद वे चुनाव जीत गए और पहली बार विधान सभा के सदस्य के तौर पर सदन में पहुंचे. यह बेहद दिलचस्प है कि बाद के दिनों में कांग्रेस की सियासत करने वाले तिवारी की शुरूआत सोशलिस्ट पार्टी से हुई. 431 सदस्ययी विधान सभा में तब सोशलिस्ट पार्टी के 20 सदस्य चुने गये थे. 1954 में इनका विवाह सुशीला से हुआ था और 1991 में इनकी पत्नी का निधन हो गया.

कांग्रेस के साथ एन.डी. तिवारी का रिश्ता 1963 से शुरू हुआ. 1965 में वह कांग्रेस के टिकट से काशीपुर विधान सभा क्षेत्र से विधायक चुने गए और पहली बार मन्त्रिपरिषद में उन्हें जगह मिली. 1968 में पं.जवाहर लाल नेहरू युवा केन्द्र की स्थापना के पीछे तिवारी का बड़ा योगदान था. 1969–1971 तक वे कांग्रेस की युवा संगठन के अध्यक्ष थे. 1 जनवरी 1976 को वे पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री बने. किन्तु यह कार्यकाल बेहद संक्षिप्त रहा. 1977 के जे.पी. आन्दोलन की वजह से 30 अप्रैल उनकी सरकार को इस्तिफा देना पड़ा। एन.डी. तिवारी चार बार (पहली बार 1976 से अप्रैल 77 तक दूसरी बार 3 अगस्त 1984 से 10 मार्च 85 तक तीसरी बार 11 मार्च 1985 से 24 सितम्बर 85 तक और चौथी बार 25 जून 1988 से दिसम्बर 1989 तक) उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रह. जून 1980 से अगस्त 1984 तक केन्द्रीय मंत्रीमण्डल में मंत्री. ये प्रध ाानमंत्री राजीव गांधी के मंत्री मण्डल में सितम्बर 1985 से जून 1988 तक केन्द्र में उद्योग, वाणिज्य, विदेश और वित्त मंत्री रहे. ये अकेले ऐसे राजनेता हैं जो दो राज्यों के मुख्यमंत्री रह चुके

हैं. उत्तर प्रदेश विभाजन के बाद वे उत्तरांचल के भी मुख्य मंत्री थे. 1990 में एक वक्त ऐसा भी आया जब राजीव गांधी की हत्या के बाद इन्हें प्रध ाान मंत्री पद का दावेदार की चर्चा जोरों पर थी, पर आखिरकार कांग्रेस के भीतर पी.वी.नरसिम्हा राव के नाम पर मुहर लग गई. बाद में इन्होंने 2002—2007 के बीच उत्तरांचल के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया. जिसे उत्तर प्रदेश से विभाजित करवाया गया था. 19 अगस्त 2007 को इन्हें आन्ध्र प्रदेश का राज्यपाल बना दिया गया. लेकिन वहां इनका कार्यकाल बेहद विवादास्पद रहा.

तिवारी जी केवल विकास की बात करते थे. उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री रहते हुए उन्होंने सीतापुर और महमूदाबाद के विकास में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता. महमूदाबाद की चीनी मिल, कताई मिल, तहसील, पॉलीटेक्निक उन्हीं की देन है. उत्तराखण्ड में उद्योग को उन्होंने बढ़ावा दिया. सिटकुन की स्थापना की. सड़के बनवाये, अस्पताल और शिक्षण संस्थाओं का विकास कराया. उनके विकास कार्यो के कारण ही उन्हें विकास पुरूष कहा जाता है.

18 जनवरी 2017 को अपने बेटे रोहित शेखर तिवारी और अपनी पत्नी डॉ. उज्जवला शर्मा (तिवारी) के साथ वे भाजपा अध्यक्ष अमित शाह की उपस्थिति में उत्तराखण्ड और उत्तर प्रदेश राज्यों में होने वाले विधान सभा चुनावों के लिए नरेन्द्र मोदी और भाजपा को अपना आशीर्वाद और समर्थन दिया. 14 मई 2014 को 89 वर्ष की आयु में इन्होंने अपने जैविक पुत्र रोहित शेखर तिवारी की मां डॉ.उज्जवला शर्मा से विवाह किया. नारायण दत्त तिवारी को 20 सितम्बर 2017 को उन्हें ब्रेन स्टोक (लकवा) होने के कारण राजधानी दिल्ली के साकेत स्थित मैक्स अस्पताल में भर्ती कराया गया था। मृत्यु के कुछ समय पहले ही अस्पताल में ही उनका जन्म दिन मनाया गया था. तिवारी ने साकेत स्थित मैक्स अस्पताल में 18 अक्टूबर 2018 को अपने जन्म दिन के अवसर पर 93 वर्ष की आयु में अन्तिम सांस लेते हुए इस दुनिया को अलबिदा कह दिया.

रेणु और उनका गवही कौशल

–श्रीमती पुष्पा श्रीवास्तव शैली
रायबरेली उत्तरप्रदेश।

रेणु की कहानियों का संसार मुख्यतः ऐसे लोगो से निर्मित है जो गांव की माटी के प्रति बेहद मोह से ग्रसित हैं. जिनका रग रग गांवों की सांस्कृतिक और लोक तात्विक वैभव में गहराई से गोते लगाता है.

अपनी कहानियों में रेणु ने आधुनिकीकरण की विडम्बना के तौर पर शहर की ओर भागने वाले ग्रामीण युवकों को अंकित किया है. लेकिन वहीं दूसरी ओर गांवों को ढेर सारी विषमताओं के बीच पुनर्जीवित करने की कोशिश भी की है. विघटन के क्षण में यदि शहर आकर रिक्शा और मजदूरी करने वाले लोग हैं, जो गांव जाकर अकड़ और शान के साथ शहरी आकर्षण की बेहिसाब कहानियां सुनाते हैं.

वहीं विजया और चुमुन्निया भी विघटन के एक विकल्प के रूप में उपस्थित हैं, जो अपने गांव के लोग रंग को बड़े ललक से देखती हैं. रेणु की कहानियों में सबसे बड़ा वैशिष्ट्य ग्राम संस्कृति है जो कहानियों में प्राण वायु का कार्य करती है. अक्ल और भैंस में अगम की खेती का जो हाल होता है, वह रेणु की ही अन्य दूसरी कहानियों के मुकाबले अधिक सच्चा और प्रमाणिक लगता है.

प्रेम संबंधों को आधार बना कर लिखी गई रेणु की कहानियां खूब चर्चित हुई. तीसरी कसम, रसिक प्रिया, रक आदिम रात्रि की महक जैसी कहानियों ने अपने ताजेपन से पाठकों को अभिभूत किया. रेणु की अधिकांश महत्वपूर्ण कहानियां नयी कहानी आंदोलन के दौर में लिखी गई. उस काल में खास तौर से ग्राम परिवेश की कहानियों में चरित्र पुनर्जीवित करने कोशिश रेणु जी द्वारा को गई.

रेणु के बारे में राजेन्द्र यादव जी का कथन है ‘परिवेश वातावरण जीवित पात्र की तरह खड़ा होकर अपना हक शायद अकेले रेणु की कहानियों में ही मांगता है. नई कहानी आंदोलन से थोड़ा पहले ही मैला आंचल उपन्यास के माध्यम से रेणु आलोचक कथाकार के रूप में प्रचलित हो चुके थे.

रेणु का कथा क्षेत्र अधिकांशतः बिहार का ही एक भूखंड है. वे अपने क्षेत्र के सामाजिक, मानसिक, आर्थिक नक्शे को बदलते हुए तीव्रता से पढ़ सके हैं. रेणु का स्थान अपने पूर्ववर्ती और समकालीन आंचलिक कथाकारों से अलग और विशिष्ट है.

रेणु की असाधारण पर्यवेक्षण क्षमता और भाषिक उतार चढ़ाव एवम् अंतर्दृष्टि के द्वारा जिंदगी के बहाव को बांधने का कौशल उन्हें साहित्य के शीर्ष पर स्थापित करता है.

रेत का महल

–सविता मिश्रा 'अक्षजा',
आगरा, उ.प्र.

'डैडी, डैडी देखो ना! उधर मैंने वंडरफुल घर बनाया है.' शुभी अपने डैडी को झकझोर रही थी, परन्तु उसके डैडी तो यादों के गहरे समुद्र में गोते लगाये हुए थे. फिर नन्हीं शुभी की आवाज कैसे सुनते वह.

समुद्र के किनारे सुहानी शाम रेत पर फैल गयी थी. लालिमा लिए सूरज पानी में सोना बिखराते हुए जाने को था. ऐसी मस्तानी शाम में मियां-बीवी, प्रेमी-प्रेमिकाएं एक दुसरे के बाँहों से लिपटे नयनाभिराम पल को जी रहे थे.लेकिन इन्हीं विहंगम दृष्य के बीच विवेक और निशा बैठकर अपनी-अपनी अतीत की यादों के पालने में हिलोरे ले रहे थे. हूँ-हाँ में होती बात भी अब दोनों के मध्य सन्नाटे में तब्दील हो गयी थी. दूर समुद्र के एक छोर से दिख रहे खम्बे की टिमटिमाती रोशनी विवेक के जख्मों को हरा कर रही थी. विवेक एक टक उसी टिमटिमाती हुई रोशनी को देखे जा रहा था.

पापा से रूठकर शुभी बगल में ही बैठी माँ से बोली-'मम्मा देखो न, डैडी मेरे बनाये रेत के घर को देखने नहीं चल रहे हैं. आप देखो, चलो ना मम्मा आप ही देखो.' निशा भी जैसे तंद्रा से लौटी हो उसके झकझोरने पर. विवेक की ओर देखकर समझ गयी कि वह पूरी तरह से तल्लीन है अपनी भूली-बिसरी यादों में.

निशा शुभी के रेत के घर को देखकर बोली- 'अरे, कितना प्यारा घर बनाया है. ओहो! इसमें तो गार्डन भी है!' शुभी मचल उठी प्रसंशा सुनकर.

'अच्छा! यह कुआँ भी बनाया है क्या? जब तक निशा यादों के गलियारे से बाहर आकर अपने शब्द का मतलब बताती, शुभी सवाल जड़ दी–

'कुआँ! यह क्या होता है! मैंने तो यह स्विमिंगपूल बनाया है. व्यूटीफूल है न!' उसकी चहकती आँखों से खुशी छलक रही थी.

निशा मुस्कराते हुए बोली-'कुआँ, जिसमें अंडरग्राउंड वाटर होता है. जो कि ठंडा और स्वीट होता है. तुम्हारी दादी यानी ग्रैंडमदर के यहाँ है. जब चलूँगी कभी भारत, तब दिखाऊँगी तुम्हें.'

'मम्मा देखो न, डैडी मेरे बनाये रेत के घर को देखने नहीं चल रहे हैं. आप देखो, चलो ना मम्मा आप ही देखो.' निशा भी जैसे तंद्रा से लौटी हो उसके झकझोरने पर.

शुभी की गोलमटोल आँखे विस्फारित-सी हो रही थी.

शुभी फिर दादी को लेकर कोई और सवाल न करने लगे उससे पहले ही वह उठकर खड़ी होते हुए बोली-'मैं अभी आती हूँ. तुम खेलो.'

यादों के झरोखों से निकलकर आती ठंडी-गरम हवा उसे भी विचलित कर रही थी. वहां से उठकर वह विवेक के बगल में जा बैठी.

मौन तोड़ती हुई हौले से बोली-'किन यादों में खोए हुए हो!' विवेक ने अनसुना कर दिया.

किंतु दुबारा जोर देकर कहने पर वह बोला-'वह दूर खड़ा स्तम्भ देख रही हो न! उस स्तम्भ की लाइट ने मुझे उन्हीं पुराने दिनों की याद दिला दी. जिससे मैं सालो से पीछा छुड़ाना चाह रहा था. इसी तरह की स्ट्रीट लाइट के नीचे बैठ पढ़-लिखकर आज इस मुकाम को हासिल किया है मैंने.

मम्मी-पापा ने कितने सपने बुने थे मुझे लेकर. जैसे तुम और मैं शुभी को लेकर बुन रहे हैं. क्या तुम बता सकती हो कि हमारे देखे सपने को पूरा करने के बाद शुभी पलटकर आएगी हमारे पास. क्या उसे उसका जीवन साथी आने देगा!'

इस तरह यादों में विवेक का यदा कदा गुम हो जाना निशा को उसकी अपनी गलतियाँ याद दिलाता रहता था. सूखे हुए उसके घाव जब-तब हरे हो जाते थें. विवेक कभी भी गड़े मुर्दे उखाड़कर उसका पोस्टमार्टम नहीं करता था, लेकिन उसका खामोश हो जाना या एक-दो जलते हुए शब्द उछाल देना ही निशा के मन में भंवर ला देता था.

आज उसका ऐसा बोलना ही निशा के दिल तक तीर चुभो गया था. लगा जैसे विवेक तंज कस रहा हो. वह तुरन्त विवेक के कंधे पर सिर रखकर बोली- 'एक महीने बाद ही शुभी के स्कूल की छुट्टी है. चलो! चलेंगे भारत, मम्मी-पापा से मिलने.'

विवेक फटी आँखों से निशा को देखने लगा. उसे शायद विश्वास नहीं हो पा रहा था निशा की बात पर.

'ऐसे क्या देख रहे हो! मुझे एहसास हो गया है कि घर दीवारों से नहीं अपनों की खुशियों से बनता है. और अपनों की खुशियों को समेटने मैं तुम्हारें साथ अपने घर चलने को तैयार हूँ.' कहते हुए वह शुभी के बनाये रेत के घर को देखने लगी.

विवेक की खुशी का ठिकाना न रहा. वह तो मन से महीने भर बाद क्या जैसे उसी वक्त माता-पिता के पास पहुँच गया था. इधर समुद्र की लहरें उसके पैरों को गुदगुदाकर लौट जाती थीं उधर यादें भी गुदगुदाने लगी थीं.

'अब कहाँ खो गए! कहा न कि चलूँगी मैं भारत.'

'आह पंद्रह साल बाद तुम्हारी बुद्धि कैसे जागी, यह सोच रहा था मैं.' तिरक्षी दृष्टी डालते हुए व्यंग्य से मुस्कराया वह.

सुनकर निशा उसके सीने पर प्रहार करने लगी और दोनों खिलखिलाने लग पड़े. समुद्र की लहरें भी दोनों के पैर के पास आकर उन्हें छू जाती थीं. जैसे खुशी जता रही थीं वह भी.

ठहाके सुनकर शुभी फिर से पापा के पास आकर बोली- 'डैडी, आपने मेरा घर नहीं देखा. कट्टी आपसे.'

विवेक झट से खड़ा हुआ. उसकी ऊँगली पकड़कर बोला-'चलो, चलो दिखाओ अपना घर.' तीनों ही खुश होकर रेत से बने घर से खेलने लगें.

'समुद्र-तट के इतने पास बनाया है, जल्दी ही शैतान लहरें तोड़ देंगी.' विवेक ने शुभी से कहा.

शुभी तुरन्त बोली- 'ओफ्फ ओ डैडी, नहीं टूटेगा.'

रेत से बने घर की दीवारें भले मजबूत नहीं थीं पर प्यार के साँचे में ढली थीं. प्यार का सीमेंट रेत से बने घर को भी मजबूती दे रहा था. विवेक ने देखा की लहरें दूर से ही लौट जा रही थीं. शायद शुभी का विश्वास पानी को पास नहीं आने दे रहा था.

विवेक को उस रेत के घर में अपने माँ-बाप के द्वारा खून पसीने की कमाई से बनाये घर की छवि दिख रही थी. जैसे शुभी इस रेत के घर को बनाकर खुश हो रही है, वैसे पापा भी तो उस ईंट-पत्थर से घर को बनाकर कितने खुश थे. जिस दिन घर बनकर पूरा हुआ था, पापा-मम्मी ने सत्यनारायण की कथा करके पूरे मुहल्ले को भोजन कराया था.' कहकर विवेक फिर से अतीत को टटोल आया.

'हर क्षण तुम्हें याद है?' आश्चर्य से बोली निशा.

'अब कहाँ खो गए! कहा न कि चलूँगी मैं भारत.'

'आह पंद्रह साल बाद तुम्हारी बुद्धि कैसे जागी, यह सोच रहा था मैं.' तिरक्षी दृष्टी डालते हुए व्यंग्य से मुस्कराया वह.

'हाँ निशा! मैं उनके हर कष्ट का गवाह हूँ. रिटायरमेंट के बाद साल-भर पापा और मम्मी ने कड़ी मेहनत करने के उपरांत उसी दिन चौन की सांस ली थी और कहा था कि अब रहेंगे आराम से अपने घर में.'

'यह तो सच है, अपने द्वारा बनाये घर को देखने सा सुख कहीं नहीं!' निशा रेत के घर से खेलती हुई शुभी के चेहरे को देखकर बोली.

'बिल्कुल! मेरा कमरा मम्मी ने कितने करीने से सजाया था. हर चीज मेरे पसन्द की थी उस कमरे में. दर्पण के नीचे बने दराजों को खोलकर जब मैंने सवाल किया था कि 'मम्मी ये सब क्या बनवाया है!' तो मेरे कान पकड़कर बोली थी- 'ये तेरी बहुरिया के लिए है. इसमें वह अपने श्रृंगार का सामान और चूड़ियाँ रखा करेगी.'

'तुम्हारी नौकरी लगने के पहले ही शादी के सपने देखने लगी थीं?' मुस्कराते हुए निशा ने पूछा.

'नहीं. मेरी नौकरी लगे अभी छः महीने भी नहीं हुए थे लेकिन उसके कानों में मेरी शादी की शहनाई बजने लगी थी. वह रह-रहकर न जाने कहाँ खो जाती थी. मुझे उन्हें वर्तमान में खींचना पड़ता था. मेरी बलाइयाँ लेकर हौले से वह मुस्करा देती थीं.

निशा की ओर देखते हुए बोला- 'माएँ भी कितने सपने बुन लेती हैं न. जबकि वो खुद नहीं जानती कि भविष्य की गर्त में क्या छुपा हुआ है. मेरी शादी तय होते ही उनके पैर जमी पर नहीं थे. पूरे घर को दुल्हन की तरह सजवाया था उन्होंने.'

शहर की चकाचौंध करती लाइटों की ओर देखकर बोला- 'इसी तरह मेरा पूरा घर अपनी सुंदरता पर जैसे इठला रहा था उस दिन. उसकी दीवारें, दहलीज भी नयी बहू के स्वागत में दमक रही थीं. कण-कण, क्षण-क्षण से खुशी के गीत फूट रहे थे. माँ तो अचानक बूढ़ी से जवान हो उठी थी. दौड़-दौड़कर सबको दिशा निर्देश देती फिर रही थी. ' याद करते-करते विवेक की आँखों में चमक जाग उठी.

'मेरे भी घर में वही माहौल था लेकिन शादी के गीतों पर मेरी माँ के तो आँखों में आँसुओं की गंगा-जमुना बहने लगती थी.' निशा की आँखों में पानी तैर आया.

उसके चेहरे को हाथ में लेकर उसके आँसू पोंछकर विवेक ने कहा -'तुमने जब घर के अंदर प्रवेश किया था तो माँ तो खुशी से फूले नहीं समा रही थी. सभी रिश्ते-नातेदार 'चाँद उतर आया तुम्हारें घर तो' कहकर मुस्करा रहे थें. माँ बहू की तारीफ सुनकर पुलकित हो रही थी. दोनों हाथ की मुड़ी हुई

उंगलियों को जोड़कर बजा देती थी। कहती किसी की नजर न लगे मेरी बेटी को.'

'सच में मम्मी तो बहुत खुश थीं लेकिन आज मैं समझी उन खुशियों को.'

निशा ने कहा ही था कि विवेक के घाव उभर आयें, वह तपाक से बोला- 'पर यह खुशी ज्यादा दिन कहाँ ठहरी.' कहकर मौन हो गया.

लेकिन मन में तूफान उठ रहा था. लहरों की तरफ बढ़कर लहरों को हाथों से छूकर बुदबुदाने लगा विवेक- 'चार दिन बाद ही तो तुमने अपना असली चेहरा दिखाना शुरू कर दिया था.'

कनखियों से निशा को देखकर फिर बुदबुदाया- 'चाँद से चेहरे के पीछे छुपे दाग जल्दी ही दिखने लगे थे. छोटा-सा घर तुम्हें कैदखाना लगने लगा था. कमरे की हर चीज तुमको आउटडेटेड लग रही थी। हर दूसरे दिन माँ से तुम्हारी कहासुनी होती सुन-देखकर मेरे कान पक गए थे. लहरें तेजी से उठी और उसके आँखों से बहते आँसुओं को जैसे धो गयीं.

'दिल पे पत्थर रख मैंने सालभर बाद ही उस पक्की ईंटों के घर को 'रेत का घर' समझ विदेश आ गया था. सुना था दीवारों के भी कान होते हैं किन्तु वो दीवारें तो मुझे पीछे से आवाज भी देती थीं. लेकिन मैं उस घर पर रह नहीं सकता था. निशा नाम की बेड़ियाँ जो पैरों में पड़ गयी थीं. माँ-बाबा का वो निरीह-सा चेहरा आँखों के सामने अक्सर घूमने लगता था. परन्तु अपनी मन की शांति और माँ-बाबा को परेशानी से बचाने के लिए मैं यही विदेश में बस गया.' लहरें भी उसके दुख को जैसे महसूस कर रही थीं. उसकी रफ्तार भी विवेक के दिल में उठे हलचल के मुताबिक चल रही थीं.

तभी निशा की आवाज कानों में गूँजी- 'फिर से किस दुनियाँ में खोये हो विवेक!'

विवेक के पास आकर निशा बोली- 'मानती हूँ! गलती हुई है मुझसे, बहुत बड़ी गलती हुई है. सबसे होती है. मुझसे भी भरम बस हो गयी. किन्तु समय रहते मैं अपनी गलतियों को सुधारना चाह रही हूँ न. तुम चिंता नहीं करो! मैं अपने उस घर को अब इस रेत के महल की तरह ढहने नहीं दूँगी. उसे अपने प्यार और संस्कार से वैसा ही सजा दूँगी जैसा मम्मी-पापा बसाना और सजाना चाह रहे थे. तुम इतना तो यकीन कर सकते हो न मुझपर!' उसकी आँखों में देखती हुई बोली.

'हाँ निशा, बिल्कुल कर सकता हूँ. मुझे मालूम है, समय ने तुम्हें बदल दिया है. अपनों से दूर, अजनबियों के बीच रहकर अपनत्व के महत्व को तुम समझने लगी हो. और रही सही कसर शुभी ने पूरा कर दिया.'

अँधेरा भी छाने लगा था. तभी समुद्र से एक लहर जोर से अँगड़ाई लेती हुई आयी और रेत के घर को अपने साथ बहा ले गयी.

घर को टूटता देख शुभी रोने लगी. विवेक के आश्वासन पर कि कल आकर इससे भी सुंदर घर हम तीनों लोग मिलकर बनायेंगे. जिसमें तुम्हारें दादा-दादी का भी एक बड़ा-सा रूम होगा.'

निशा तुरन्त बात को बढ़ाते हुए बोली- 'उस कमरे के एक कोने में दादा जी की मूविंग चेयर होगी. जिस पर झूलते हुए तुम्हारे दादा जी तुमको इंटरेस्टिंग स्टोरीज सुनाएंगे.'

सुन वह खुश होकर आँख मटकाकर बोली- वाव, डैड सच्ची.

विवेक ने कहा-'यस मुच्ची!'

'इसमें तो दादाजी का कमरा नहीं था. अच्छा हुआ पानी ने तोड़ दिया. दोनों की ऊँगली पकड़कर नन्हें-नन्हें पैरों से बड़े-बड़े डग भरती हुई शुभी घर की ओर जाने लगी.

----o----

क्या नई शिक्षा नीति से लौटेगा मातृभाषा माध्यम?

'हम कौन थे क्या हो गए, और क्या होगे अभी. आओ मिलकर विचारें, ये समस्याएं सभी. इन पंक्तियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि अक्सर लोग यह सोचते हैं कि भारत का अंग्रेजीकरण अंग्रेजों ने किया जबकि सत्य यह है कि स्वतंत्रता के समय भी देश के 99% से भी बहुत अधिक लोग मातृभाषा में ही पढ़ते थे. भारत के संविधान में हमने हिंदी को राजभाषा बनाया और विभिन्न राज्यों की भाषाओं को वहां की राजभाषा बनाया और धीरे-धीरे अंग्रेजी को समाप्त करते हुए भारतीय भाषाओं को अपनाने का संकल्प लिया. लेकिन इसके ठीक विपरीत शासन-प्रशासन सहित जीवन के हर क्षेत्र में अंग्रेजी तेजी से बढ़ती गई और देश के छोटे-छोटे गांवों तक अंग्रेजी माध्यम पहुंच गया. अब नई शिक्षा नीति में सरकार ने प्राथमिक स्तर या उससे आगे की शिक्षा मातृभाषा में देने की बात कही है. लेकिन तस्वीर अभी भी बहुत साफ नहीं है आज देश के सामने यह प्रश्न खड़ा है कि क्या नई शिक्षा नीति से शिक्षा में मातृभाषा माध्यम लौटेगा?

डॉ. एम. एल. गुप्ता 'आदित्य', निदेशक, वैश्विक हिंदी सम्मेलन

अनाज

धर्म रोटी देता
भाषण देता राशन
जति मिटाती भूख
तो मान देता उन्हें
ज्ब जरूरी है अनाज
जीने के लिए
ते किसान को क्यों न माने
खेती ही धर्म

रोटी ही जात
राश नही देवता
बाकी सब बेकार बात
उन्हें बाद में कर लेगें
कष्षक के आँसू पौंछो
वरना खून की आंसू रोना होना
या तो रोटी का कोई तोड़
बताओ

भूख का हो कोई इलाज
ते दो भाषण, धर्म, जात
ब्दजात बातों पर
स्मय खराब करने से
अच्छा है
आओ लगाये पेड़
खोदे तालाब
बोयं बीज
बंजर धरा को बनाये उपजाऊ।

चोर मौज करें

अरबो खाकर भाग गये
और आप कहते हैं
तुम्हारा पैसा
सरकार का हो गया
मेरी मेहनत की कमाई
उस पर बैंक की न जाने
कितनी कटौती
मेरे बचे-खुचे पैसों
पर डाका क्यों
मैंने क्या किया
उन्हें पकड़ो

हमारा पैसा
हम ही चोर
कैसे भरोसा करें तुमपर
कोई दिवालिया
कोई भगोड़ा हो गया
इसमें मेरे खून-पसीने
का क्या दोष
ये कैसा नियम है
क्या सही है दोष हमारा
ळमें नहीं आता
लूटकर भागना

हमें नहीं पता कैसे
किया जाता है
खुद को दिवालिया घोषित
ईमानदारी से रहना
कब से अपराध
कहलाने लगा।
क्या यही कानून है
चोर मौज करें।
और शरीफ लूटा जाये।

–nolUn dekj feJk
छिन्दवाड़ा, म.प्र.

अनुपमा प्रधान, शिलांग, मेघालय की कविताएं

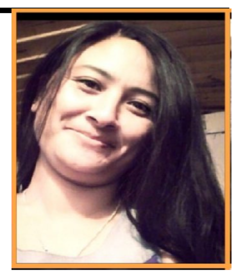

विदाई

सोच के बेटी की विदाई,
देखो कैसी आँखें आई।
अभी जैसे कल ही लगता है;
हमारे आँगन खुशियाँ बन के आई।
देखो समय का खेल,
बनी आज हमारे लिए पराई।
बचपन से अब तक थी,
हमारे घर की मान-सम्मान।
अब बनेगी दूसरे घर की शान,
बढ़ाएगी उस घर की मान।
सच कहते हैं लोग,
बेटी होती है पराया धन।
पर इस सच्चाई को
अपनाने से कतराता है मन।
आज समझ आया बिदाई का एहसास,
नासमझ मैं न समझ पाई बिदाई का एहसास।

उम्मीद का फरिश्ता

आज वर्षों बाद उम्मीद की किरण,
आईं फैलाने खुशियाँ मेरे घर-आँगन।
जीवन के हर मोड़ पर हो हताश,
खत्म न होगी सुखी जीवन की तलाश।
न सोचा दुःख के बादल छँट जाएँगे,
साँसों की डोर एक दिन टूट जाएँगी।
लगा सबकुछ बिखर गया,
सपनों को जोड़ना मुश्किल हो गया।
वर्षों बाद उम्मीद ने जिन्दगी में दस्तक दी,
एक फरिश्ते ने मुझे हिम्मत दी।
कहा-हिम्मत न हरोय न करो गम।
खुशियाँ दे रहीं हैं तुम्हें दस्तक,
कर लो पूरी अपनी चाहत।
है उस फरिश्ते का साथ,
नहीं घबराती मैं अब आज।
जीतने का साहस मैं जुटा पाई,
बिखरे सपने आज समेट पाई।
आशीर्वाद ईश्वर का और फरिश्ते का साथ,
वर्षों बाद ले रही हूँ चौन की साँस।
हे! उम्मीद के फरिश्ते
मत छोड़ना मेरा साथ।

कुछ दोहे

हृदय दीप में यदि नहीं भरता सचमुच स्नेह,
रोशन हो सकता नहीं अंदर बाहर गेह भरपूर स्नेह।
होती अपने आपसे, जब जीवन भर जंग,
भरता जीवन में तभी, सच्चाई का रंग।
ऊँचाई को जगत की गर करना है स्पर्श,
मन में रखिए सदा ही कुछ ऊँचे आदर्श।
मन चाहे जिस दिशा जा हर दिन है अनुकूल,
मिले सफलता पग बढ़ा, दिशाशूल को भूल।
जब मरज़ी जो काम कर करके तनिक विचार,
घड़ी-मुहूर्त का नहीं कोई ठेकेदार।
सब ही उन्नति हेतु निज करते हैं बहु यत्न,
जो समाज हित कर्मरत वो समाज का रत्न।
काट रहे हैं उसी को, बैठे हैं जिस डाल,
फिदाईन सा हो गया, आज हमारा हाल।
कुछ अंकों को जोड़कर नौ से देकर भाग,
ठगते लोगों को यहाँ शातिर तेज़ दिमाग़।
शोषण करते जो यहाँ लोगों का दिन-रात,
करते हैं वो ही अधिक, नीति-धर्म की बात।
देते हैं जो सदा ही, ग़लत शेर पर दाद,
बन बैठे हैं आज वो, बहुत बड़े नक्काद।
ग़लत बात पर रहोगे अगर सदा चुपचाप,
अपनी नज़रों में स्वयं गिर जाओगे आप।
जो जन हर पल ही यहाँ रहते दुखी निराश,
ढोने को अभिशप्त वे जीवन भर निज लाश।
जीवन में जिसने नहीं झेले झंझावात,
सह पाता है वो यहाँ नहीं तनिक आघात।
सुख दुख मान अपमान हो नफ़रत पीड़ा प्यार,
आता है सब लौटकर देते जो हर बार।
करते हैं जो कभी भी नहीं सार्थक काम,
जग क्यूँकर सम्मान दे, उनको सीताराम।

-**सीताराम गुप्ता,** पीतमपुरा, दिल्ली

मेरे ख्वाबों की बगिया में

मेरी ख्वाबों की बगिया में, तुम फूल बन खिले हो मिल
के सांसों को मानिन्द गुलाब की महकायेंगे
उड़ती हुयीं तेरी काली जुल्फें घटाएं याद दिलायेंगी
तेरे बदन की खुशबु मंद बयार में घुल नहलायेंगीं
नक्षत्रों में मौन विचरते तन्हा चाँद नहीं हो तुम
फिजाओं में मंदिर की घंटी सी तुम्हारी हँसी गूँजेगी
मूँद कर तुम पलकें, जब जब अपने अंदर झाँकोगे
दिल की गहराईयों में, तुम्हें हम ही नजर आयेंगे
एक दिन हम चले जायेंगे, निशानी यहीं छोड़ जायेंगेतुम
किताबों को सहेज लेना, किस्सों में मशहूर हो जायेंगे

-मंजु शर्मा (हलवारा), mnjs64@gmail-com

कुऐं के अन्दर

समय बदलते देर नहीं लगती है,
मुट्ठी में से रेत फिसल जाता है।
विश्वासों के पंख उखड़ जाते है
फिर मन पंछी गीत नहीं गाता है।
दिशाहीन हो जाता है जब कोई
तब सुशांत भी शांत न रह पाता है।
जीवन की इच्छाऐं मर जाती है
एकाकी पन इतना डर पाता है।
और झूँठ जब हावी होने लगता
साथ नहीं देती है बिलकुल सत्ता।
तब फिर वह जो सब कुछ देख रहा है
दुश्टों को दंडित करने आता है।
नभ पर छाऐं कुछ असत्य के बादल
सूरज का अस्तित्व छिपा लेते है।
किन्तु झूँठ के पंख सभी जल जाते
सूरज जब किरणों को फैलाता है।
ईष्वर का अस्तित्व भूलाकर प्राणी
करता है कुछ पाप कुऐं के अन्दर।
वहीं आदमी सत्य प्रकट होने पर
अपनी परछाई से घबराता है।
बना स्वंयभू डोल रहा धरती पर
बहकावे में आकर अहितकरो के।
शिव शंकर का नेत्र तीसरा उसको
काम देव की भांति भस्माता है।
धैर्य धरो अन्याय न्याय पर केवल
इक सीमा तक ही हावी रहता है।
न्याय देवता की दृष्टि पड़ते ही वह
पतंग की भांति जल जाता है।
धरती का तुम न्याय खरीद सकते हो
पर ईश्वर का न्याय नही बिकता है।
अन्यायी को जब तक दण्ड न मिलता
तब तक ही वह मन को बहलाता है। **हितेश कुमार शर्मा**

संकल्पदीप

इस बार रीना ने विद्रोहिणी होकर कन्या भ्रूण हत्या का विरोध करते हुए अपने पति को समझाया कि इस भ्रूण को कन्या के रूप में विकसित होने दें.

Mk0 egk'ork proinh

जिस परिवार में रीना का व्याह हुआ है, उस परिवार में ना लड़के हैं, ना लड़की, फिरी भी उसकी विमाता नहीं चाहती कि रीना माँ बने. जब से रीना इस नये परिवार में आई है तब से ही उसे मातश्त्व सुख की इच्छा का गला घोंटना पड़ा है. उसके पति सुखदेव ने उसके कई एवोर्शन करा दिये, क्योंकि विमाता उन्हें अपने संकेतों पर नचाती हैं, विमाता कहती है-''बेटियाँ हो गईं तो क्या होगा?'' मैंने विमाता सुशीला को समझाया कि लड़कियों को कम न आँकों, किन्तु वो कहती है कि लड़की हुई तो शादी कैसे होगी? कहां से पैसा आयेगा, जैसे तैसे व्याह करने के बाद भी पता नहीं कैसी ससुराल मिले, किन्तु सुखदेव विमाता की अवमानना नहीं कर सकते, उनकी बातों को वेदवाक्य कहकर मानना सुखदेव की आदत बन चुकी है. रीना ने इस बार पुनः गर्भ धारण किया तो विमाता सुषीला को यह असह हो गया और उसने सुखदेव से अल्ट्रासाउण्ड कराने का दबाब बनाया, रीना के निषेध पर भी सुखदेव ने रीना का अल्ट्रासाउण्ड पैसे के बल पर सुपरिचित डाक्टर से कराया. जब कन्या के गर्भ का पता चला तो सुखदेव असंयत हो गया. विमाता के साथ उसने रीना पर एर्वोषन कराने का दबाव बनाया. कहते हुए रीना अस्पताल की ओर अकेली चल पड़ी. अल्ट्रासाउण्ड व एक्सरे वार्ड के आगे बैठी वो एकाकिनी तनावों में थीं. वहां की महिलाओं से उसके देर तक सम्वाद हुए. घण्टे भर बैठकर वो अल्ट्रासाउण्ड कक्ष में पहुंच गई.''

इस बार रीना ने विद्रोहिणी होकर कन्या भ्रूण हत्या का विरोध करते हुए यथावत स्थिति में रहने की असह प्रतिज्ञा कर डाली. उसने विमाता और अपने पति को समझाया कि इस भ्रूण को कन्या के रूप में विकसित होने दें किन्तु विमाता ने शर्त रक्खी ''ठीक है'', किन्तु यह जिद पति पत्नी के सम्बन्ध को विघटित करेगी-'क्यों, कन्या को जन्मदेना क्या अपराध है?'

अपराध इस दृष्टि से है कि कन्या को बो सब नहीं दिया जा सकता जिसकी उसे अपेक्षा है.''

''मांजी ऐसा न कहें, मैं पालूँगी अपनी लाडली को'' ''नहीं नहीं! मैं अपनी आँखों से कन्या की वेकद्री नहीं देख सकती, अच्छा हो वो दुनिया में ही न आये.''

''चलिये ठीक है जो आप कहेंगी'', सुशीला ने सुखदेव के घर पहुंचने पर दोनों के विषय में बताया कि वो अस्पताल गई है. तत्काल सुखदेव ने कहा ''ठीक है मैं भी जाता हूँ, उसे लिवाकर घर आऊँगा'' कहते हुए अस्पताल की ओर चल पड़ा, रास्ते में रीना को देखा जो वापस घर आ रही थी.'' ''कैसे, क्या हुआ?'' तनावग्रस्त रीना ने कहा ''हाँ अल्ट्रासाउण्ड में बेटे के जन्म के विषय में डायगनोज किया है'' सुनकर सुखदेव को कुछ सन्तोष हुआ. घर पहुंचकर सुशीला को पूरी बात सुखदेव ने बता दी.

रीना के दिन उधेड़बुन और शंकाओं के बीच निकल रहे थे. वो मन ही मन सोचती कि बेटियों के प्रति लोगों की संकीर्ण सोच क्यों बढ़ती जा रही है?'' मन नही मन वो कहती है ''बेटी न हो जाये, इसी कारण बिना सोचे समझे, कई बार मेरा गर्भपात कराया गया है'', सासू माँ स्वयं भी तो नारी है, मामूली दफ्तर से लेकर सियासी गलियारे तक अभी तक नारियां ही हाशिए पर हैं. कब तक चलेगा यह. सोचते हुए रीना किचिन में जाकर काम करने लगी. सुशीला ने कर्कश स्वर में कहा ''धीरे-धीरे हाथ न चलाओ, आज वैसे ही देर हो गई है.'' रीना मौन बन अपने कामों में संलग्न थी.

सुखदेव के साथ सुशीला के संवाद चल रहे थे. ''चलो बेटा होगा, अच्छी खबर है. लड़कियाँ कम से कम हों यही अच्छा है.'' ''माँ आप ठीक कह रही हैं, आये दिन लड़कियों के साथ क्या हो रहा है किसी से छिपा नहीं है. शादी के बाद भी उनकी फजीहत हो रही है''

सुशीला ने कुछ पल मौन रहकर कहा ''लड़कियों के साथ आये दिन छेड़छाड़ और उनकी अस्मत लूटी जा रही है'' ''लेकिन माँ यह सब कैसे दूर होगा? सुशीला ने बेटियों के प्रति उपेक्षाभाव से कहा ''बेटियाँ ही न हों तो ये दूर हो जायेगा? दोनों के संवादों के बीच सुशीला की पड़ोसन निर्मला ने बीच में आकर प्रसंग परिवर्तित कर दिया.'' आपके पास आई हूँ, क्योंकि इधर बहुत दिनों से मिलना नहीं हुआ, मैं भी जालों में फंसी रही. ''कैसा जाल'' प्रश्नवाचक दृष्टि से निर्मला की ओर देखते हुए कहा जिस पर उत्तर मिला ''बेटी के साथ छेड़छाड़ हुई थी, गुंडे पकड़ गये, बेटी ने उनके मुंह पर थप्पड़ भी जड़ दिया.'' शावाश ठीक किया उसने. कहते हुए सुशीला ने उसी प्रसंग को उठाया ''बेटियाँ मुसीबत बन कर आती हैं.'' निर्मला ने बीच में ही वाक्य काटकर कहा ''बेटियाँ मुसीबत बनकर नहीं, मुसीबत दूर करने आती हैं, हमें उन पर अत्याचार करने वालों का विरोध करना चाहिये.'' इस अन्तराल में रीना किचिन से चाय बनाकर ले आई.'' भई वाह! रीना भी लड़की है, बहू के रूप में क्या नहीं करती है वो'' सुशीला के चेहरे पर खीझ दीख रही थी. दोनों में देर तक बातचीत चलती रही.

रीना का हर दिन मानसिक उलझनों से व्यास था. मन ही मन सोच रही थी कि उसने कोई अल्ट्रासाउण्ड न कराकर झूठ बोल दिया कि अल्ट्रासाउण्ड ने बेटे के जन्म को सुनिश्चित किया है. अगर बेटी हुई तो जाने क्या क्या सुनना है मुझे, किन्तु मुझे इसका डर नहीं है बेटी को मैं बो बनाऊँगी जो बेटे नहीं बन पाते. हर स्थिति में मौन रहकर मुझे बेटी की सुरक्षा के उपाय करने होंगे.'' महीनों निकल गये और ज्यों ज्यों जन्म का समय पास आ रहा था त्यों त्यों वो शंकाओं के सागर में डूबती जा रही थी.

रीना चैक-अप के वहाने अस्पताल के समीप रहने वाली सहपाठिनी रमा के घर पहुंच गई जहां उसके संग चैकअप कराया तदनन्तर उसके आवास पर पहुंच कर हृदय की बहुत सी गुप्त बातें कर डालीं और रमा निरन्तर रीना का उत्साह बढ़ाती रही. रीना ने हताश भरे स्वर में कहा ''बेटी के साथ बहुत कुछ करना चाहूँगी किन्तु मेरे साथ रोजगार तो हो, ऐसे बी.एड. होकर भी बिना व्यवसाय रहना अच्छा नहीं लगता'' ''सो तो ठीक है बेटी के जन्म के बाद कुछ व्यवसाय भी होना चाहिये. कैसे पालोगी उसे, क्योंकि तुम्हारी सासू मां तो बेटी जन्म के खिलाफ है. वो तो उसे पड़ने लिखने में भी आगे नहीं आने देंगी.'' ठीक कह रही हो, पतिदेव उनके अन्धभक्त, उनके संकेतों पर नाचने बाले हैं.. मेरा साथ न देकर उनका साथ दे रहे हैं, अतः मैं पशोपेश में हूँ.'' आश्वस्त करते हुए रमा ने पुनः कहा ''अच्छे काम में कैसा डर, तुम्हें बेटी को मजबूत बनाना है वो बिना शिक्षा के नही हो सकती.'' ''हां हां देखों न मेरी दामिनी को, उसे मैं डाक्टर बनाऊँगी. स्वावलम्बिनी बेटी का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता.''

दोनों सहेलियों में बहुत देर तक बातें चली. जिससे रीना का बोझिल मन हल्का हो गया. रमा ने रीना को प्रसव के छः माह बाद किसी सुपरिचित के मान्टेसरी स्कूल में नौकरी का आश्वासन भी दे दिया.

दोनों सहेलियों में बहुत देर तक बातें चलती रहीं जिससे रीना का बोझिल मन हल्का होता जा रहा था. रमा ने रीना को प्रसव के छः माह बाद किसी सुपरिचित के मान्टेसरी स्कूल में नौकरी का आश्वासन भी दे दिया था, जिससे निराशा के गहन मेघ छटते दीख रहे थे. रमा के साथ संवाद कर उसे ऐसा लगा मानों उसका निराश का सारा कुहासा छट गया हो. वो अपने भावी स्वप्नों को कथाओं के सुनहरे तागों से बुन रही थी.

घर आकर उसने सुशीला के समीप कुछ समय व्यतीत किया तदनन्तर आदेशित होकर घर के कार्यभार संभालने लगी. बारम्बार उसके कर्णकुहरों में रमा के शब्द गूंज रहे थे. ''बेटी को सुशिक्षित और मजबूत बनाना है, जिससे उसके पग किसी भी मार्ग पर डगमगायें नहीं, भले उसे आवांछित पथ मिलें, किन्तु अपने संकल्पों से अवांछित को भी वांछित के रूप में बदल सके. '' विचारमग्न रीना हर पल ग्रहस्थी के कामों में स्वयं को व्यस्त रखती थी. टहलने के लिए वो कभी कभार रमा के घर तक भी हो पाती, जहां पहुंचकर रमा उसे निरन्तर आश्वस्त करती रहती जिससे उसे नयी आस्था मिलती. सुखदेव भी सहयोगी बनकर रीना को आश्वस्त करता रहता उसे बेटे के जन्म का पूर्ण विश्वास था. आए दिन रीना के पसंदीदा फल व खाने की वस्तुयें लाकर उसे प्रसन्नत रखता. कई माह ऐसे ही बीते और वो दिन भी सहसां आ गया जिसकी सुशीला और सुखदेव को प्रतीक्षा थी. नौ माह के बाद रीना को भयंकर पीड़ा सताने ली तथा उसे राजकीय अस्पताल में भर्ती कराया

गया. सुखदेव भी इसी स्थान पर आफिस में क्लर्क थे. रीना को भर्ती कर सुशीला अस्पताल में प्रतीक्षारत थी. जब कुछ पलों के बाद सूचना मिली कि वो नन्हीं गुड़िया की दादी बन गई है, उनका मुख आक्रोश से लाल हो गया. किन्तु वो बाहर नहीं आ पा रहा था. जब नर्स ने बधाई देते हुए नेग माँगा तो सुशीला ने उत्तर दिया ''बेटी का नेग नहीं होता.'' कहते हुए मुंह फेर कर घर की ओर चल पड़ी. सुखदेव वहां रुके थे. रीना के प्राइवेट वार्ड में आते ही सुखदेव ने रीना से कहा 'बधाई हो बेटी की, किन्तु तुमने बेटे की सूचना कैसे दे दी, तुमने अल्ट्रासाउण्ड की रिपोर्ट ही गलत बता दी, खैर कोई बात नहीं बेटा-बेटी में कोई फर्क नहीं, रीना मैं बेटी को भी बेटे जैसा ही प्यार दूंगा. रीना सुखदेव की बातों को सुनकर निश्चिन्त थी. रमा ने अस्पताल आकर

रीना को बधाई दी और कुछ देर बातों का सिलसिला चलता रहा. रीना के प्रसव के दिनों में रमा ने अपनी सहेली का पूरा ध्यान रक्खा.

दो चार दिन बाद रीना जब घर आ गई, सुशीला ने रीना का का जापा प्रसन्नता से किया. रीना सप्ताह भर में घर में चलने फिरे लगी. धीरे-धीरे सामान्य दिनचर्या आरम्भ हो गई. सुशीला प्रायः रीना को समझाती ''बेटिया को दूध कम देना जिससे मोटी न हो पाये, मोटी लड़कियों कौन पसन्द करता है.'' ''वहीं माँ के दूध से कन्या का स्वास्थ्य बनता है. जैसे बेटा वैसी बेटी और सुशीला ने उसका नाम दीपा रख दिया.

धीरे-धीरे चांदनी की भांति दीपा घर परिवार में खुशियों का आलोक विखेरने लगी. कन्याओं का बढ़ना ज्ञात नहीं होता, धीरे-धीरे बढ़कर वो सौन्दर्य की प्रतिमा लगने लगी. दीपा के घर में आते ही शुभ कर्म भी बढ़ने लगे. सुखदेव की पदोन्नति हुई, जिससे उनका दीपा के प्रति अनुराग बढ़ गया.

वर्षभर में रीना भी स्कूल में अध यापन करने लगी, भले ही वो बच्चों के स्कूल का हो, तथा रीना की दुश्चिन्तायें कम होने लगी. ध ीरे-धीरे दीपा जब तीन वर्ष की हुई, वो भी माँ के साथ उसी बाल विद्या मंदिर में जाने लगी. रीना ने दीपा को उसकी आयु के अनुसार पढ़ाना लिखना भी आरम्भ कर दिया था.

रमा के घर के पास ऐसी लोमहर्षक दुर्घटना हुई कि सभी दहशत में थे. एक परिवार में नवजात बेटे की मौत का जिम्मेदार पत्नी को बताकर ऐसी बारदात हुई कि सब डरे डरे थे. पत्नी के अस्पताल से घर आते ही उसे पीट पीटकर मार डाला तथा घायल पत्नी ने मरने से पूर्व बयान मजिस्ट्रेट को दिया था. उसके पिता ने तत्सम्बन्धित तहरीर थाने में दी, जिससे पुलिस ने पति को हिरासत में ले लिया, अब पत्नी के शव का पोस्टमार्टम कराया जायेगा, सदर की रहने वाली भावना की शादी कांधरपुर के प्रमोद से हुई थी. उसने घर पर ही पुत्र को जन्म दिया था. तीन दिन बाद बेटे की हालत बिगड़ने लगी, उसका उपचार भी हुआ, किन्तु फिर भी मृत्यु ने उसे धर दबोचा.

कौन माँ तथा शिशु को या अपनी सन्तान को मारना चाहेगी. फिर भी भावना पर उसके पति ने ही लांछन लगाकर उसे भी दुनिया से विदा कर दिया। क्या यही है नारी सम्मान.

नारी को अपमानित करना आम बात होती जा रही है. रमा और रीना ने इस लोमहर्षक घटना से नारी को पूरी तरह असुरक्षित समझ लिया जो सामाजिक सच है. रीना ने साश्चर्य कहा कि क्या यह वही नारी है जिसे शक्ति-दुर्गा और लक्ष्मी कहा गया है. जिस पर रमा ने कहा 'हां-हां यह वही शक्ति है. ''किन्तु रमा 'शक्ति' कहने भर से काम नहीं चलेगा इनके प्रति लोगों की सोच भी बदलनी चाहिये क्योंकि ये विकास का अहम हिस्सा है. '' ''यह तो ठीक है किन्तु इन्हें सुरक्षा का वातावरण देना भी जरूरी है.' रीना ने कहा 'मैं दीपा को ऐसा ही सुरक्षित देखना चाहती हूँ.'' रमा ने आश्वस्त करते हुए कहा-''उसे ऐसे माहौल में ढालो कि वह बेटी-बेटा का भेद ही भूल जाये.'' ''हां यही करना है मुझे. अब वो अठारह वर्षीया किशोरी है अपनी इच्छा के अनुसार वो डाक्टर बनना चाहती है. मैं उसकी इच्छा का स्वागत करूँगी.'' और दोनों अपने-अपने गन्तव्य को चल पड़ीं. दीपा ने माँ से कहा-''माँ मैं अच्छी डाक्टर बनूँगी. कृपया मुझे सी.पी.एम.टी. की कोचिंग चाहिये.'' ''जरूर जरूर'' और दीपा की कोचिंग की व्यवस्था अगले दिन से हो गई. किन्तु सुशीला का पारा चरम सीमा पर चढ़ गया. ''हमारे घर बेटियों की शादी पहिले पढ़ाई बाद में'' 'दादी जी नहीं, अब वो जमाने बीते गएकृ मैं कहती हूँ पहिले पढ़ाई, बाद में शादी. सुशीला मौन बन कर अन्दर ही अन्दर आक्रोश के ज्वालामुखी को छिपाये थी. सुखदेव के आते ही माँ सुखदेव को अपने कमरे में लेजाकर उस पर बरस पड़ी. ''क्या है यह पढ़ाई पढ़ाई, दीपा तो अभी से बाचाल हो गई, क्या करेगी ऐसी पढ़ाई का ससुराल में जवाब देकर हमारी नाक कटायेगी.'' सुखदेव ने माँ को आश्वस्त करते हुए

कहा-''वही होगा जो माँ कहेगी कृपया दीपा को सिर्फ एक मौका देना है, यदि सलैक्शन नहीं हुआ तो पढ़ाई बन्द और शादी.''

माँ आश्वस्त होकर भी मौन थी. दीपा दिनरात पढ़ाई में जुटी थी. दो माह बाद जब परीक्षा हुई दीना ने आश्वस्त होकर परीक्षा दी. रीना, रमा, दीपा तथा सुखदेव की कामना थी कि बेटी की पढ़ाई अबरूद्ध न हो, अतः दीपा नित्य सायं दीप जलाकर ईश्वर से अपनी सफलता हेतु प्रार्थना करती.

''ओमजय जगदीश हरे'' दीपा सन्ध या -वन्दन यज्ञ भी करती. उसे माँ और मासी रमा का पूरा प्रोत्साहन था. रीना प्रायः कहतीं समाज की तस्वीर सिर्फ बेटियाँ बदल सकती हैं. नहीं सहती बेटी तथा बेटी की माँ. किन्तु आजकल घर बाले बेटियों की उपेक्षा करते हैं.'' ''यही नहीं कन्या भ्रूण हत्या भी बेरोकटोक चलरही है.'' जिस पर दीपा ने कहा ''मैं डाक्टर बनकर सबसे पहिले कन्या भ्रूण हत्याओं पर रोक लगाऊँग.''

रमाने रीना तथा दीपा से विश्वास भरे स्वर में कहा ''मेरे सामने ऐसी महिलायें नहीं आतीं जो भ्रूण हत्या करायें, मेरी स्वयं की दूर के रिश्ते की बहन को मैंने ऐसा समझाया कि उसने कन्या भ्रूण हत्या का विचार सदैव को छोड़ दिया.'' रीना ने समर्थन भरे स्वर में कहा ''जो कन्या भ्रूण की हत्या कराते हैं उनके घर न बेटे होते नाही बेटी, उनके घरों में शमशान घाट की चुप्पी फैल जाती है कृपया बैसे जीव हत्या को हर धर्म में पाप के रूप में स्वीकृत किया गया है. महरी भी इतनी सजग हो गई है कि उसने कन्या भ्रूण की हत्या न कराकर सास को भी सबक सिखा दिया. ''दीपा कन्या भ्रूण हत्या को सजगता ही बन्द करायेंगी और हाँ कन्या भ्रूण हत्या पर रोक लग चुकी है उसके बाद भी लुक छिपकर लोग ये काम करा रहे हैं. कन्या जितना प्यार अपने माता-पिता से करती है उतना बेटे नहीं कर सकते. जिस पर दीपा ने कहा ''मैं डाक्टरों के अन्दर सजगता उत्पन्न करने का प्रयास करूँगी, जिससे वे कन्या भ्रूण हत्या को छोडकर मानवता के विकास की बात करे. डाक्टरों का काम मात्र पैसा कमाना ही नहीं इंसानियत की रक्षा करना भी है, बेटी

रीना प्रायः कहतीं समाज की तस्वीर सिर्फ बेटियाँ बदल सकती हैं. किन्तु आजकल घर बाले बेटियों की उपेक्षा करते हैं.

वो कर सकती है जो बेटे नहीं कर सकते. तदनन्तर दीपा अपने परीक्षाफल के लिए आकुल हो उठी.

परीक्षा के बाद दीपा निरन्तर रिजल्ट की प्रतीक्षा कर रही थी. रिजल्ट सबसे पहले रमा ने देखा रमा की सूचना पर जब दीपा ने रिजल्ट देखा-मौन हो गई. पुनः रीना और सुखदेव ने रिजल्ट देखकर दीपा की पीठ ठोंकते हुए कहा- ''तू ने वो कर दिखाया जो कोई आसानी से नहीं कर सकता. बहुत बधाई.'' सुखदेव का वाक्य पूरा हुआ, वैसे ही रीना ने कहा-''बेटी तू बेटे से कम नहीं! तू डाक्टर बनना चाहती थी, सो प्रवेश परीक्षा में उत्तीर्ण हुई. मेरा सपना रंग लाया जिसे मैंने आशा के सुनहरे तागों से बुना है और तू अब मेडिकल कालेज में जाकर पढ़ेग. केवल डाक्टर ही नहीं अपितु समाज की संकीर्ण सोच को भी बदलेगी. सार्थक हुआ मेरा मातृत्व. दीपा ने माँ को गले लगते हुए कहा-'माँ मैं बेटी ही नहीं आपका बेटा हूँ, ऐसा बेटा जो किसी भी स्थिति में नहीं बदलेगा, हाशिए पर पड़ी नारी को सम्माननीय स्थान दिलायेग. माँ मैं अपनी सशक्त भूमिका का निर्वाह करूँगी'' सुशीला के हर्षातिरेक में आँसू वहे जा रहे थे. सुखदेव ने तुरन्त मिठाई खरीदी और पढ़ोस में हर्षोल्लास के साथ बटवा दी. दीपा के विश्वास ने ऐसा संकल्प-दीप जलाया जिसे आँधियाँ भी नहीं बुझा सकती. रीना के विवर्णमुख पर अनोखी मुस्कान थी जिसे देखकर सुखदेव हर्ष के प्रवाह में बहने लगा.सुशीला मन ही मन विचारों के ताने वाने बुन रही थी किन्तु दीपा के आत्मविश्वास को देखकर निरुत्तर थीं.धीरे-धीरे कन्या भ्रूण हत्या के प्रति सुशीला के हृदय में निषेधात्मक भाव उत्पन्न होने लगे जो नयी सोच की ओर उन्मुख होने के लक्षण थे. दीपा ने सुशीला के संशय भरे अन्ध ाकार में कन्या भ्रूण हत्या के प्रति संवेदना का दीप जो जला दिया था.

संपादक के नाम पाती

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखो पर अपने विचार या कोई सुझाव नीचे दिये गये ई-मेल आईडी पर भेज सकते है। स्थान की उपलब्धता के हिसाब से हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।
vsnehsamaj@rediffmail.com

-संपादक

लघु कथाएं

अपनत्व

पूरे ज़ीने में काफी चहल-पहल थी. छोटे-छोटे कई बच्चे ऊपर-नीचे आ-जा रहे थे और खेल-कूद रहे थे. दरअसल शर्माजी के यहाँ मेहमान आए हुए थे. उनकी बहन के बेटे की शादी थी. वो अपने पूरे परिवार के साथ शादी का निमंत्रण देने और भात न्यौतने के लिए आई हुई थी. शर्माजी ऊपर वाले फ़्लैट में रहते हैं. उनके नीचे वाले फ़्लैट में गुप्ताजी का परिवार रहता है. दोनों परिवारों में बड़ी घनिष्टता है. शर्माजी के परिवार ने शाम की चाय पर गुप्ताजी के परिवार को भी बुला लिया था. उनकी बहन ने गुप्ताजी के परिवार को भी शादी का कार्ड दिया और आने का आग्रह किया. चाय के साथ खाने-पीने का इतना अधिक सामान था कि सबके पेट भर गए. मिसेज गुप्ता ने कहा कि आज रात खाने की छुट्टी. खाते-पीते और गपशप करते शाम कब बीत गई पता ही नहीं चला. चाय के बाद जब गुप्ताजी का परिवार बाहर निकला तब तक बाहर अँधेरा हो चुका था और सबने अपनी-अपनी बाहर की लाइटें जला ली थीं. सीढ़ियों में कॉमन लाइटें नहीं हैं लेकिन सबके दरवाज़ों पर रोशनी की अच्छी व्यवस्था है और रात देर तक लाइटें जलती रहती हैं. गुप्ताजी के घर के बाहर तो कभी-कभी सारी रात ही लाइटें जलती रहती हैं. जब गुप्ताजी का परिवार जाने लगा तो मिसेज शर्मा ने मिसेज गुप्ता से यूँ ही अपनापन जताने के लिए कहा, ''आज मेहमानों को जाते-जाते देर हो जाएगी. आप अपनी लाइटें जलती रहने देना.'' ''ये भी कोई कहने की बात है?'' मिसेज गुप्ता ने भी उतने ही अपनेपन से जवाब दिया. डिनर के बाद जब महमान जाने के लिए बाहर निकले तो देखा कि नीचे सीढ़ियों में पूरी तरह से अँधेरा पसरा हुआ थ. सभी लाइटें बंद थी. अगले दिन मिसेज शर्मा ने शिकायत करते हुए मिसेज गुप्ता से कहा, ''अरे भई वैसे तो आपकी लाइटें सारी-सारी रात जलती रहती हैं. कल कहने के बावजूद लाइटें जल्दी बंद कर दीं.'' मिसेज गुप्ता ने जवाब दिया, ''अब हमें क्या पता था कि आपके मेहमान इतनी ज़्यादा देर से जाएँगे? फिर रात को सोने के बाद कौन उठता लाइटें बंद करने?'

-सीताराम गुप्ता, पीतमपुरा, दिल्ली-110034

पलटा हुआ पासा

मोहन के दो बेटे थे. बड़ा बेटा मास्टर और छोटा दरोगा था. मोहन ने अब ढान लिया था कि दोनों की शादी करनी है. इस सिलसिले में जब भी कोई लड़की वाला आता तो छोटे लड़के के बारे में ही बात करता जबकि लड़के के बाप को पहले अपने बड़े बेटे की शादी करनी थी? लेकिन बार-बार लोग छोटे लड़के के लिए ही प्रस्ताव लेकर आते थे.

ऐसा देखकर मोहन के बड़े बेटे को अपने आप में मास्टर होने की ग्लानि सी महसूस हुई. वह सोचने लगा था, वह क्यों नहीं अच्छी शिक्षा लेकर किसी अच्छे पोस्ट पर है? अगर ऐसा होता तो लोग उसके लिए ही पहले अपनी लड़की के लिए शादी का प्रस्ताव लेकर आते! डसके मन में एक दृढ़ता का जन्म हुआ जिसमें वह रात-दिन पढ़ने लगा. प्रतिफल वह एक दिन आई०ए०एस० बन गया. अब पासा बिल्कुल पलट चुका था. इन दिनों जो भी लड़कीवाला आता तो मोहन को कहता, चाहे कुछ भी हो जाए, पैसे-कौड़ी जो भी आपको चाहिए वह मैं आपको दूँगा लेकिन हमे तो अपनी बेटी की शादी के लिए आपका बड़ा बेटा ही चाहिए.

मुढभेड़

उस दिन एक आदमी एक किराने की दूकान में आया और पन्द्रह-बीस हजार के सामान अपनी गाड़ी में रखवाकर चलने लगा. तब दूकानदार ने कहा, इस सामान का पैसा? अरे मालिक को कह देना, जान 'प्यारी है कि नहीं?'

यह बात सुनकर दूकानदार अवाक हो गया. तभी कुछ लोग वहाँ आए और दूकानदा से कहा, 'गोपाल इस शहर का नामी गुण्डा है. आप किससे उलझ पड़े है.' तब तक गोपाल की गाड़ी वहाँ से जा चुकी थी.

दो दिनों के बाद ही दूकानदार को मालूम हुआ कि गोपाल पुलिस की मुढभेड़ में मारा गया. यह समाचार सुनकर दूकानदार म नही मन वुदवुदोने लगा, जिसकी मौत इतनी नजदीक थी वह दूसरे को कह रहा था, मालिक की जान 'प्यारी है या नहीं? पहले वह अपनी जान के विशय में पता कर लेता तभी वह ऐसी बात बोलता!

-डॉ० सूरज मृदुल

वह युवक

हम पिछले सप्ताह ट्रेन में सफर कर रहे थे, हमें नीचे की २ सीटें मिली थी और सामने वाली में एक छोटा सा परिवार बैठा था. पति-पत्नी और नन्हीं सी बालिका. देहरादून से गया तक वो भी हमारे हमसफर थे. बच्ची दो से ढ़ाई का साल की थी. कभी अपनी वाली खिड़की में तो कभी मेरे

वाली। जिस तरफ भी प्लेटफार्म आता वो उसी तरफ आ जाती और खिड़की से झांक-झांक कर छोटी-छोटी चीजों की ड़िमान्ड़ करती. उसके पापा ने एक बार भी उसकी इच्छा को नहीं नकारा. वह भरसक प्रयत्न कर उसे हा चीज लाकर दे रहे थे. उसे गोदी में बिठा खिला-पिला रहे थे. जहां गाड़ी कुछ लम्बे समय के लिये रूकी, वो उसे घुमा भी लायें. इसके अलावा बाकी सारे काम अपने, पत्नि के व बच्ची के वह खुशी-खुशी कर रहे थे. मुझे उन्हें देखकर कई बार काफी अचम्भा भी हुआ. भारत में पैतृक व पुरूष प्रधान समाज में ऐसा सुलझा इन्सान देखकर हैरानी होनी कोई बढ़ी बात न थी. रात का खाना हमने इक्ट्ठा आर्डर किया और साथ में ही खाया. उसने सबकी प्लेटें फटाफट समेटी और बाहर फेंक आए. मुझसे रहा न गया. पूछ ही बैठी, ''बेटा, इतनी क्या जल्दी थी हम खुद कर लेते.'' वह बोला, ''नहीं आप भी मेरे माता-पिता के समान हैं इसमें क्या फर्क पड़ता है. दो अपनी और दो आपकी. दुआ ही तो मिलेगी.'' ''ये तो है.'' मैंने कहा. ''पर आजकल ऐसे प्यारे बच्चे कहाँ?'' उसके चेहरे के भाव बदल से गयें. मैंने कहा, 'मैं कल शाम से तुम्हें देख रही हूँ, तुम लगातार काम किये जा रहे हो, थके नहीं.'' उसने जवाब दिया, ''ऑटी, जब मैं 6 साल का था मेरी मॉ मर गई, मेरा भाई साढ़े तीन साल का था। लोगों ने पापा को दूसरी शादी करने को को कहा. उन्होंने की नहीं. वह घर का सारा काम जैसे-तैसे करते और ड्यूटी पर भी जाते. मैं भी उनकी मदद करता. करते-करते आज ये वक्त आ गया और ऑटी बिन मॉ के बच्चे खुद ही सीख जाते हैं सारी जिम्मेदारियॉ निभाना.'' कहते-कहते उसकी ऑखें भर आई और हम सब शॉत हो गये.

''विवशता''

वह बेहद टूट चुका था, बेरोजगारी से सारा दिन इधर-उधर भटकने के बाद उसकी भूख अक्रोश में बदल चुकी थी. वह कुछ कहने के इरादे से एक अंधेरी वीरान सी सड़क पर बनी पुलिया पर बैठ गया. आधी रात के बाद एक आकृति तेजी से चलती हुए नजर आयी यह सचेत हो गया.

उसने उस आकृति को पीछे से दबोच लिया. वह स्त्री थी. उसने स्त्री के मुंह पर हाथ रखकर उसके कान में धीरे से कहा, ''अपनी इज्जत बचाना चाहती हो तो रूपये मेरे हवाले कर दें.''

वह तड़पी और तेजी से उसका हाथ पीछे हटा बोली, ''मुझे इज्जत की परवाह नहीं है, हां रूपये मैं नहीं दे सकती, क्योंकि मैं इज्जत बेचकर ही ये रूपये लाई हूँ.

-शराफत अली खान-बरेली-उ.प्र.

सोच

रोहन मेरे पड़ोस में रहता हैं. मैं भी इस स्थान पर कुछ दिनों पहले ही आई हूँ. वह छोटा सा बालक मात्र 10–11 बरस का है. अकसर मुझे देखते ही मुस्कुरा देता. मुझे भी उसे देखकर अच्छा लगता. एक दिन साथ की पड़ोसन ने बताया कि ये बालक मात्र 5 बरस का था जब इसकी मॉ चल बसी. अब यह सौतेली मॉ के पास हैं, उसके भी दो बच्चे और हैं. मॉ-बाप दोनों इससे अच्छा व्यवहार नहीं करते. फिर भी यह हमेशा मुस्कुराता इनका सारा काम करता रहता है. एक दिन जोरों की बारिश हो रही थी. मैं गलियारे में बैठी बारिश का मजा ले रही थी कि रोहन भी हमारे घर आ कर मेरे पीछे खड़ा हो गया. पानी से भीगा वह और भी सिकुड़ा सा लग रहा था. मुझे चाय पीने का बहाना मिल गया. मैं उसे अन्दर ले गई. तौलिये से उसका सिर पोंछा, उसे कुर्सी पर बिठाया और चाय बनाने लगी. इसी बीच मैंने पढ़ाई के बारे में उससे कुछ बातें पूछनी शुरू की. गजब के जवाब थे उसके. मेरा मन प्रसन्न हो गया. मैंने उसे शाबाशी दी और चाय बिस्कुट खाने का आग्रह किया. जैसे ही उसने चाय का कप उठाया, उसकी बाजू पर नीला गहरा निशान मुझे पसीज गया. ''ये क्या हुआ?'' वो चुप शान्त बैठा रहा. मैंने फिर पूछा, उसने जवाब दिया, ''कल रात मॉ की मदद कर रहा था, ठीक से काम न कर पाय, दो रोटी मुझसे जल गई. मॉ ने चिमटा मार दिया. बस ये जरा सी लग गई.'' मेरे मुँह से चीख निकल गई, ''जरा सी, ये जरा सी है. तेरे पापा ने कुछ नहीं कहा?'' ''वो क्या कहते, वो तो मुझे ही डॉटते. पर ऑटी, एक बात बताऊँ, ये कोई बड़ी बात नहीं हैं. अगर आज मेरी मॉ जिन्दा होती तो मैं बिगड़ जाता. ये दोनों सख्त हैं तो मैं अपनी कक्षा में प्रथम आता हूँ और कभी एक बड़ा अफसर बन ही जाऊँगा. फिर देखना.....'' कह कर वो तेजी से भाग गया और मैं उसकी बड़ी अनोखी सोच पर हाथ मलती रह गई.

-शबनम शर्मा,

माजरा, सिरमौर, हि०प्र०

"मैं कौन हूँ?"

डॉ० अरुण कुमार आनन्द
चन्दौसी, संभल, उ०प्र०

"परमात्मा की प्राप्ति क्यों नही होता?"
न तं विदाथ न इमां ज जान आनन्दयं युष्माकं अंतरं,
बभूर्व, प्रविष्ताः जलया चो सुतष्प उकथ्शासश चरन्ति।।

विनियार्थः मनुष्य उसे नही जानते-पहचानते शरीर दृष्ट होते हुए भी जिसने बनाया और संसार में जन्म देकर भेजा कि "कर्तव्य परायण बनो, और मेरा स्मरण करो" कितने आश्चर्य को युक्ति है, वह प्रत्येक जीव प्राणियों का मानवरूपी पिता हैं परन्तु स्वतः मानव उस परम पिता परमात्मा से शरीर दृश्य होते हुए भी जुदा है? तुम्हारा और उसके सानिध्य में क्यों अन्तर पड़ गया है? जब कि मनुष्य का प्रभू से अन्तर नही होना चाहिए? मनुष्य तो परमात्मा का आत्मा है, आत्मा में ही सदैव विश्वरण करता है, फिर उसके साथ यह गुण-गुणात्मक द्वंद क्यों? उससे तो अधिक निकटश्थ वस्तू तो कुछ भी नही है. हो भी नही सकता."

सत्वत्वः वह प्रत्येक मानव आत्मा में परमात्मा स्वरूप में विद्यमान है, और व्यापक निकट है, फिर भी हम उसे क्यों नही पहचानते और शिलामूर्ति में ढूंढते फिरते है? प्रत्येक जीवप्राणियों के अन्दर आत्मारूप में धड़कते उस परमपिता का दर्शन क्यों नही कर पाते? हम मनुष्यों से बड़ा मुर्ख और कौन होगा? यह स्मरण-चिंतन करो कि "मैं कौन हूँ? तो उस परमात्मा के साकार दर्शन होने लगेगा. फिर उसे मंदिरों मस्जिदों देवालयों में तलाश करने की जरूरत नहीं पड़ेगी. फिर वह हमसे दूर क्यों होगा? रजो और तमोगुण ने उस परमात्मा और हमारे बीच पर्दा डाल दिया है, इसलिए पास होकर भी वह हमें दिखाई नही देता, लोभ-मोह क्रोध अहं ने हमारी मति भ्रष्ट कर रखी है इसलिए उस परमात्मा से बड़ा हमें धन, एवं धनोपार्जन दिखता है? यदि धन परमात्मा से बड़ा है, धनोबल से मृत्यु को क्यों नहीं रोका जा सकता? इसका मूल कारण क्या है, कि हमारे और परमात्मा के बीच प्राकर्षतिक दिवार खड़ी हो गई है। मनुष्य दो प्रकार के पर्दों से ढका हुआ है, इतना निकट होकर भी उससे इतना दूर होता जा रहा है. और यह पर्दा है अस्तिकत्व का ढोंग और पाखण्ड है. मनुष्य सोचता है कि मंदिर के मूर्ति के आगे सवा रूपया का प्रसाद चढ़ा कर सवा करोड़ मांगने की प्रवृत्ति-

मन्नते मांगने से सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जायगी, किंतू वह भूल रहा है कि उसने परमात्मा को कुछ नही दिया, उसके बैंक में कुछ जमा नही किया, जीवप्राणियों से घृणा किया तो वह कहां से सवा करोड़ देगा? उसके पास कोई टकशाल नही लगा है? जो जितना उसे देगा उतना ही उस परमात्मा से भी पायगा. इसी युक्ति को अध्यात्म में दानपुण्य और परमार्थ कहा गया है. परमात्मा तो भाव का भूखा है चढ़ावा प्रसाद का भूखा नही है, दया और करूणा का प्यासा है, तर्पण-अर्पण का प्यासा नही हैं जीव प्राणियों पर दया और उसकी सेवा ही परमात्मा की प्राप्ति का सरल और सुगम मार्ग है. मनुष्य चाहे कितना ही अध्यात्मिक ढोंग एवं पाखण्ड क्यों न रच ले वह परमात्मा पर आशक्त आस्तिक नही हो सकता, फिर वह सुखी और सपन्न कैसे होगा? परमात्मा की प्राप्ति के लिए परमात्मा के प्रति आशक्त होना आवश्यक है. इसके लिए किसी मंदिर मस्जिद देवालयों में जाकर पाखण्ड करने की आवश्यकता नही है, न पिताम्बर भगवा वेष धारण करने की जरूरत है? सिर्फ रजो एवं तमोगुणों का परित्याग करने की आवश्यकता है. ऐसे ही महान व्यकितत्व थे संत कबीर दास, प्रत्येक मानव को संत कबीर दास के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए.

तमोगुण बाहुल मनुष्य नीहार (अज्ञान्ता) से ढके हुए होते है, जिसकी धुंध में इतने पास होते हुए भी परमात्मा को देख नही पाते, दर्शन नही करपाते, दूसरे रजोगुण बाहुल लोग जल्पिविद्या के शब्दा-अंडम्बर से अभिभूत मुर्खता से निर्धक कल्पना के पर्दे से अपने आप को ढके रहते यह दोनो प्रकार के मनुष्य नास्तिकता के मार्ग में इतनी दूर तक बढ़ते जा रहे है, प्रभू से दूर होते जा रहे है, अर्थात प्रभू से दूर हो गए हैं, उनको वापस मनुष्य जून में लौटना संभव ही नही है. नीहारवृत वे मृत्युलोक में असुतृप्त होकर विभिन्न यनियों में विचरण कर रहे है, खाते-पीते मौज करते निरंतर अपने जीवन के रक्षार्थ ही सक्रीय है. इच्छाओं-कामनाओं के संपूर्ति हेतू जगत में अपने प्राणों में ही, ज्यो-त्यों अपनी बढ़ती हुई अनगिनत अभिलाशाओं लोभ मोह को तृप्त कर पुष्ट करते जाते है, त्यो परमपित परमाप्मा से दूर होते जाते है मृत्युपर्यान्त नरक भोगते है. इसी प्रकार दूसरे अल्प जल्पावृत मनुष्य उकथ्शास होकर.

आयुर्वेद का चमत्कार

-डॉ० अरुण कुमार आनन्द
सीतारोड, चन्दौसी, संभल, उ०प्र०

लैटिन भाषा में ''सोलेनम'' कहा जाता है. भारत की आम भाषा में रीगंजी-कंडियारी, (भट कटैया) भी कहते हैं. यह वनौषधि पौधा भारत के सभी प्रदेशों-जनपदों में अमूमन पाया जाता है. इसकी तीन प्रजातियां होती है, स्वेतफूल-पीलाफूल और नीले फूलवाली, अभी बर्फानी प्रदेशों के खोज में इसकी चौथी प्रजातीः स्वेत, लाल बैगनी आभा के फूल वाली भी पाई गई है. इसकी खोज वनौषधि रिर्सर्च सेन्टर के वनौषधि अनुसंधान वैज्ञानिक दल (उत्तराखण्ड) ने की है. इसका पौधा दो फूट भूमि में फैला वर्गाकार कांटेदार होता है। इसमें भटकटैया की तरह आकार का स्वात धारीयुक्त लाल रंग का फल अप्रैल-मई माह में लगता है. स्वाद में अत्यन्त ही कडुआ होता है. इस शोध आलेख में हम इसी वनौषधि का वर्णन कर रहे हैं. कंडियारी (सोलेनम) के बारे में वर्णन करने की आवश्यकता नहीं है, सभी आम लोग व वैद्य हकीम कडियारी के गुणधर्म के बारे में जानते हैं. कंडियारी के अर्क में शिवलिंगी एवं पुत्रजीवक बूटी कचनार कौंच बीज लौहभस्म वंग भस्म 10+10 ग्राम के साथ 12 घंटे खरल करके 05ग्रा० की गोली बनाकर बांझ स्त्री को सेवन करवाया जाए तो उसका बाँझपन समाप्त होकर पुत्र की प्राप्ति होती है. निसंतान दम्पत्तियों के लिए यह फार्मूला इश्वरिय वरदान है. किंतु (इसका प्रयोग अनुभवी वैध-हकीमों के संरक्षण में ही करना चाहिए)

उपरोक्त लाल कंडियारी (Red Solenume) अत्यन्त ही दुर्लभ वनौषधि तपत्ति के साथ-साथ कैंसर एडस दमा जैसे असाहय रोगों में अलग अलग फार्मूलाओं के साथ प्रयोग करने का वर्णन आयुर्वेद ग्रंथों में बताया गया है. सभी प्रकार के कैंसर में इसका प्रयोग अतिविशा, अतीस और मयूरशिखा के साथ करने का विधान है. यह कमियाई वंश की बूटी है. किमियागीर प्रजाती के लोग इस बूटी के तलाश में प्रदेशों जनपदों जंगलों पहाड़ों गांव के खेत खलिहानों में गिद्ध की भांति मडराते रहते हैं. ग्राम-देहात की भाषा में इनहे खाना बदहोश-बरूआ कहते है. जो तंत्र-मंत्र के जानकार तांत्रिक भी होते है इनहे सभी औषधिए पौधों की अच्छी जानकारी होती है. कंडियारी में गर्भ स्थापक के अपार गुर्ण होता है.

इसका प्रयोग वैद्य हंकीम 'लक्ष्मणा' के स्थान पर प्रयोग करते हैं. अब इस फामूलों के मिक्षण से भाष प्रकृयाओं द्वारा 'आयुर्वेदिक इंजेकशन' भी तैयार होने लगा है. जिसका प्रयोग 'एडस-कैंसर जैसे असाहय रोगों में प्रयोग किया जा रहा है.

सूर्ख कंडियारी बहु वर्षायु वनौधी है, इसका क्षुप दो से चार फुट के व्यास फैला चमकीला कांटेदार हरे रंग का पौधा है. पत्तिया 1/4 इंच डाली पर घने कांटे होते हैं। कांटे पत्तियों पर भी होते हैं. पत्तों की लम्बाई 1/2 इंस से 1 इंच, चौड़ाई 1/4 इंच होता है. फल बेर के समान होता है.

गुणधर्म-काली कंडियारी की जड़ तथा फूल-फल बंध्या दोष को समाप्त कर संतानही लोगों को संतानवान बनाता है. किंतु केवल कडियारी का प्रयोग हानीकारक भी है, इसलिए इसका प्रयोग केवल वैध के निर्देशन में ही करना चाहिये. काली कंडियारी का फल-पत्ते जड़ सम भाग मिश्री 10 ग्राम काली मिर्च 10 ग्राम कूट पीस कर गाय के दो कि०ग्रा० दूध में 2/1/2 ग्राम सफेद मूसली मिलाकर खोया बनाएं ऋतुस्नाव के बाद एक हफ्ते तक भोजन के एक घंटे बाद 20 ग्राम खोआ संतान विहिन स्त्री को शिवलिंगी-पुत्र जीवक बूटी का चूर्ण 05 ग्राम के साथ नित्य सेवन कराने से पुत्र की प्राप्ति निश्चित है. इससे बांझस्त्री को भी गर्म धारण हो जाता है.

पुष्य नक्षत्र में काली कंडियारी के पौध को दूध-धूप का अर्थ देकर घर में लाकर रखने से टोना-टोटका, तंत्र मंत्र भूत पिचास की बाधा समाप्त हो जाता है, धन-सम्पत्ति की बढ़ोतरी होती है. किसी प्रकार का सामाजिक-आर्थिक अभाव नही होता है. क्योंकि इस पौधा को भगवान शंकर का दिव्य वरदान शास्त्रानुसार प्राप्त है. किमियागीर (वरूआ) समाज इसके रस को पारे में घोंट कर निबद्ध कर लेते है.

तथा ताम्र (तांबा) को भेद का स्वर्ण बना लेते है. तात्पर्य यह कि पारा तांबा सालिगराम स्टफिक और काली कंडियारी रस के मिक्षण से स्वर्ण बन जाता है. (किंतु इसके निर्माण की प्रकष्याएं हमें ज्ञात नही है) यह प्राणस्रोत की अद्भूत एवं महत्वपूर्ण वनौषधि है. 'गजकेशर' मामक औषधि में इस बनौषधी का शास्त्रोकत मिक्षण होने से सभी प्रकार के कैंसर, अल्सर, अपसमार-पथरी, एवं उदर विकार में अत्यन्त ही लाभकर है, रोग जड़ से समाप्त हो जाता है.

हृदय, महास्रोत रोग इसके सेवन से नष्ट हो जाते है. इसमें मिक्षण से तैयार औषधियों से त्रिदोष-स्वांश-कांस-दमा -क्षप एवं नाड़ी संस्थान के रोग (हृदयघात) अपस्मार हिस्टेरियाः गुर्दे की पथरी-फेफड़ों के विकारः ट्यूमर-रसौली रोग भी समाप्त हो जाता है. सुजक-कुष्ठ मसाने और पित्त की पथरी में भी लाभदायक है. निस्सारक ज्वर-नाशत संजीवनी अमृत है.

जिन स्थियों को संतान नहीं होता, मासिक धर्म नियमित नहीं है. राजस्राव की विकृतियां हैं, गर्भ नही उळरता या गर्भपात हो जाता है, फैलोपिथय टियूब बंद है, गर्भास्य की विकृतिया हैं, या गर्भास्य का कैंसर है, उसे उपरोक्त फार्मूले से निर्मित औषधी का नियमित सेवन कराने से समस्त समस्याएं समाप्त हो जायगी. ''गंज केशर औषधि तैयार करने का योग''

काली डियारी अर्क-500 ग्राम, सफेद कंटकारी पंचाग अर्क-500 ग्राम, पुत्र जीवक बीज-चूर्ण-20 ग्राम, शिवलिगी नागकेसर चूर्ण-20 ग्राम, नागौरी अश्व गंधा चूर्ण-50 ग्राम, शुद्ध शिलाजीत चूर्ण-90 ग्राम, अशोक छल चूर्ण-20 ग्राम, कमल गट्टा चूर्ण-90 ग्राम, पिपल जटा चूर्ण-20 ग्राम, सतावर चूर्ण- 90 ग्राम, कसर अफगानी-90 ग्राम, जावित्री-05 ग्राम, लौंग–05 ग्राम, कचनार गुग्गल–90 ग्राम, कौंच बीज (शुद्ध)–05 ग्राम, शुद्ध कुचला–02 ग्राम, कामदूध पिष्टी–05 ग्राम, मोतीपिष्टी–05 ग्राम, अभ्रक भस्म–90 ग्राम, एकागीवरी रस (भस्म)-05 ग्राम, हजरूल यहूद भस्म–90 ग्राम, मोती पिष्टी–02 ग्राम, हरिक भस्म–02 ग्राम, लौहभस्म-पारा भस्म-स्वर्ण भस्म-कांत भस्म त्रिधातु भस्म स्वर्ण भक्षिक भस्म-प्रवाल पिष्टी वंगभस्म अंकीक पिष्टी प्रति 3+3 ग्राम (उपरोक्त सभी वनौषधियो को कूट-पीस कर अर्क में 19 घंटे खरल में घोंटे, एक जान होने पर भस्मादि मिश्रण कर खरल में दो क्षंटे तक घोंटे. धूप में सुखा कर पुन्ह घोटे. 500 मि०ग्रा० का कैपसूल भर लें.

(एक कैपसूल प्रतिदिन भोजन के एक घंटा बाद सुबह-शाम उष्ण गऊ दूध से सेवन करें. पुत्र की इच्छा वाली स्त्रियों को युग्म काल में, सम्भोग करना चाहिए. अयुग्म काल में सम्भोग से कन्या की प्राप्ति होती है. अन्य रोगों में ''गज केशर'' चूर्ण के साथ एक कैपसूल प्रतिदिन गऊ दूध से प्रयोग करना चाहिए, इसके साथ 'प्यूरेकस' एक कैपसूल भी लेना आवश्यक है या अमरवरी कैपसूल लें.

(प्यूरेकस और अमरवटी कैपसूल डी०पी० ड्रग्स मेरठ की बाजार में उपलब्ध है)

उत्तम तीन प्रतियोगिता के परिणाम घोषित

11 सितम्बर, प्रयागराज। अप्रैल २०२० से प्रारंभ हुए ऑन लाईन काव्य एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के 06 चरणों में लॉक डाउन 01 से 03 के उत्तम तीन का चयन का पूर्व में ही हो चुका है. लाक डाउन 4 से 06 के काव्य एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के प्रथम तीन स्थान पाने वाले प्रतिभागियों का उत्तम तीन के चयन हेतु अलग से प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। उक्त जानकारी देते हुए संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने बताया कि आयोजन के मुख्य अतिथि डॉ० इरेश स्वामी, पूर्व कुलपति, पूण्य श्लोक अहिल्या देवी होल्कर विश्वविद्यालय, सोलापुर, महाराष्ट्र ने काव्य प्रतियोगिता के परिणाम की घोषणा की तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के परिणाम की घोषणा संस्थान के अध्यक्ष डॉ० डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख ने की.

काव्य प्रतियोगिता में शिलांग, मेघालय की सुश्री अनुपमा प्रधान को प्रथम, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश के श्री सतीश कुमार मिश्र को द्वितीय एवं कालचेस्टर, ब्रिटेन की श्रीमती इंदू बरैठ को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। इसी प्रकार प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में सोनभद्र, उत्तर प्रदेश के श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी को प्रथम, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश के श्री शुभ द्विवेदी को द्वितीय एवं चांपा, जाजगीर, छत्तीसगढ़ के श्री लक्ष्मीकांत वैष्णव को तीसरा स्थान प्राप्त हुआ। काव्य प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में डॉ० पूर्णिमा उमेश झेडे, विभागाध्यक्ष-हिन्दी, भौसल मिलिटरी महाविद्यालय, नासिक, महाराष्ट्र एवं प्रो० कल्पना गवली, हिन्दी विभागाध्यक्ष-हिन्दी, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा, गुजरात रही।

लाक डाउन ०१ से ०३ के उत्तम तीन एवं लाक डाउन ०४ से ०६ के उत्तम तीन प्रतिभागियों में से सर्वोत्तम तीन प्रश्नोत्तरी एवं काव्य के चयन के साथ ही लाक डाउन प्रतियोगिता का यह चरण समाप्त हो जाएगा। संस्थान के इस १५ जून २०२० को अपने २४ वर्ष पूर्ण कर २५वें वर्ष में प्रवेश किया है। यानि अगले वर्ष हम अपना रजत जयंती समारोह मनाएंगे। इसलिए मई २०२१ तक लगातार विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होते रहेंगे। इसी क्रम में १५ वर्ष तक की उम्र के बच्चों का बच्चा पार्टी प्रतियोगिता ०२ से सितम्बर से चल रही है, जो २१ दिनों तक चलेगी। इसी तरह के अन्य आयोजन भी निरंतर होते रहेंगे।

ऑन लाईन प्रश्नोत्तरी एवं काव्य प्रतियोगिता के परिणाम घोषित

डॉ० ज्योति जैन, **मुख्य**

डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख- अध्यक्ष

बायें से दाये श्री रविकांत कुम्भज, श्रीमती मंजू जायसवाल एवं श्रीमती रंजना

बायें से दाये डॉ० संगीता पाल, श्री सतीश कुमार मिश्र

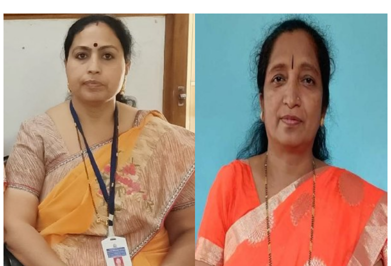

निर्णायकः डॉ० अरुणा राजेन्द्र शुक्ल एवं डॉ० सुमा टी. रोडनकर

२६ अगस्त २०२०, प्रयागराज। “ हिन्दी है हम, वतन है हिन्दोस्ता हमारा। जय हिन्द, जय हिन्दी की अवधारणा को लेकर चलने वाला विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज अपने मुकाम की ओर निश्चित ही अग्रसर है. कोरोना काल में भी ऑन लाईन प्रतियोगिताओं का आयोजन कर देश विदेश के हिन्दी सेवियों ककओ आगे लाने कका सफल प्रयास कर रही है. उक्त विचार विश्व हिन्दी साहित्य सेवा स ंस्थान, इलाहाबाद द्वारा लाक डाउन ६ के ऑन लाईन प्रतियोगिताओं के परिणाम घोषणा के अवसर पर मुख्य अतिथि के रुप में शामिल हुए डॉ ज्योति जैन, व्याख्याता डिजाइन, मीडिया व मैंनेजमेंट कॉलेज, इंदौर ने कहीं.आयोजन के बारे में जानकारी देते हुए संस्थान के सचिव डॉ० गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने बताया कि कोरोना काल के प्रारब्ध ा से शुरु हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं की कड़ी में यह अंतिम प्रतियोगिता का परिणाम है। इसके बाद सितम्बर में उत्तम तीन एवं सर्वोत्तम तीन के चयन के साथ इस कड़ी का समापन हो जाएगा।

लाक डाउन (तालाबंदी)०६ काव्य प्रतियोगितता के परिणाम की घोषणा आयोजन की मुख्य अतिथि डॉ० ज्योति जैन ने की। जिसमें डॉ० संगीता पाल-कच्छ, गुजरात को प्रथम, श्रीमती मंजू जायसवाल, दुर्ग, छत्तीसगढ़ को द्वितीय तथा श्री सतीश कुमार मिश्र, प्रयागराज, उ.प्र. को तृतीय स्थान ,

श्रीमती अंजू अग्रवाल-अजमेर, राजस्थान को चौथा, श्री राकेश मिश्रा-सोनभद्र, उ.प्र. को पांचवा तथा कुमारी अनामिका प्रधान को छठा स्थान मिला.

लाक डाउन ६ प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के परिणाम की घोषणा कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख प्राचार्य, पूणे, महाराष्ट्र एवं अध्यक्ष विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, ने की। जिसमें श्री रवि कांत कुम्म्भज, शिलांग, मेघालय को प्रथम, श्रीमती मंजू जायसवाल, छ.ग. को द्वितीय एवं श्रीमती रंजना कुमारी-शिलांग, मेघालय को तृतीय, श्री प्रियाशु बरुआ-तेजपुर, असम को चतुर्थ, श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी-सोनभद्र, उ.प्र. को पंचम, श्रीमती दीप्ति मिश्रा-प्रयागराज, उत्तर प्रदेश को छठां तथा श्री शुभ द्विवेदी-प्रयागराज, उत्तर प्रदेश को सांतवा स्थान प्राप्त हुआ।

काव्य प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में डॉ० अरुणा राजेन्द्र शुक्ल हिन्दी विभागाध्यक्ष, शोध निर्देशिका ना.ए.सो. साइंस कॉलेज, नादेड़ महाराष्ट्र एवं डॉ० सुमा टी. रोडनकर एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, विश्वविद्यालय कालेज, मंगलूर, कर्नाटक ने अपनी महत्ति भूमिका अदा की। श्री द्विवेदी ने बताया कि लाक डाउन ६ प्रश्नोत्तरी में ब्रिटेन सहित भारत के १२ राज्यों के प्रतिभागियों ने तथा काव्य प्रतियोगिता में भारत के ६ राज्यों प्रतिभागियों ने प्रतिभाग किया।। बहुत ही कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच प्रतियोगिता सम्पन्न हुई।

तीन पीढ़ियों संग हिन्दी के विकास में जुटे हैं : कृष्ण कुमार यादव

हमारे देश में प्रतिवर्ष १४ सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है. हिंदी को लेकर तमाम विद्वान, संस्थाएँ, सरकारी विभाग अपने स्तर पर कार्य कर रहे हैं. इन सबके बीच एक परिवार ऐसा भी है, जिसकी तीन पीढ़ियाँ हिंदी और हिंदी साहित्य की अभिवृद्धि के लिए निरंतर अपने लेखन के माध्यम से प्रयासरत हैं. भारतीय डाक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी एवं सम्प्रति लखनऊ मुख्यालय परिक्षेत्र के निदेशक डाक सेवाएँ कृष्ण कुमार यादव के परिवार में उनके पिता श्री राम शिव मूर्ति यादव के साथ-साथ पत्नी आकांक्षा यादव और दोनों बेटियाँ अक्षिता और अपूर्वा भी हिंदी को अपने लेखन से लगातार नए आयाम दे रहे हैं. देश-विदेश में तमाम सम्मानों से अलंकृत यादव परिवार की रचनाएँ प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन के साथ रेडियो और दूरदर्शन पर भी प्रसारित होती रहती हैं. हिंदी ब्लागिंग के क्षेत्र में इस परिवार का नाम अग्रणी है.

वर्ष 2001 में हिंदी माध्यम से अपने प्रथम प्रयास में ही भारतीय सिविल सेवा में चयन के उपरान्त श्री यादव सूरत, कानपुर, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह, इलाहाबाद, जोधपुर, लखनऊ में विभिन्न पदों पर पदस्थ रहे हैं. प्रशासनिक सेवा के दायित्वों के निर्वहन के साथ श्री यादव की अभिलाषा (काव्य संग्रह), अभिव्यक्तियों के बहाने, अनुभूतियाँ और विमर्श (निबंध संग्रह), क्रांति यज्ञः 1857—1947 की गाथा, जंगल में क्रिकेट (बाल गीत संग्रह) एवं 16 आने, 16 लोग सहित कुल सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं. विभिन्न प्रतिष्ठित सामाजिक -साहित्यिक संस्थाओं द्वारा विशिष्ट कृतित्व, रचनाधर्मिता हेतु शताधिक सम्मानों से सम्मानित हो चुके हैं.

श्री यादव के पिता श्री राम शिव मूर्ति यादव हिंदी में निरंतर लेखन कार्य कर रहे हैं, वहीं पत्नी आकांक्षा यादव की भी तीन पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं. हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज द्वारा प्रकाशित 'आधी आबादी के सरोकार' इनकी चर्चित पुस्तक है. 'दशक के श्रेष्ठ ब्लागर दम्पति' सम्मान से विभूषित यादव दम्पति को नेपाल, भूटान व श्रीलंका में आयोजित 'अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ब्लागर सम्मेलन' में परिकल्पना ब्लागिंग सार्क शिखर सम्मान'' सहित अन्य सम्मानों से नवाजा जा चुका है. आपकी दोनों बेटियाँ अक्षिता (पाखी) और अपूर्वा भी इसी राह पर चलते हुए अंग्रेजी माध्यम की पढाई के बावजूद हिंदी में सृजनरत हैं. अपने हिंदी ब्लाग 'पाखी की दुनिया' हेतु नन्ही ब्लागर अक्षिता भारत सरकार द्वारा सबसे कम उम्र में 'राष्ट्रीय बाल पुरस्कार' से सम्मानित हैं. अक्षिता को प्रथम अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ब्लागर सम्मेलन में 'श्रेष्ठ नन्ही ब्लागर' से सम्मानित किया गया.

श्री यादव का कहना है कि, सृजन एवं अभिव्यक्ति की दृष्टि से हिंदी दुनिया की अग्रणी भाषाओं में से एक है. हिन्दी सिर्फ एक भाषा ही नहीं बल्कि हम सबकी पहचान है, यह हर हिंदुस्तानी का हृदय है. डिजिटल क्रान्ति के इस युग में हिन्दी में विश्व भाषा बनने की क्षमता है.

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1&20 **वर्ष से कम उम्र वालों के लिए:** पं. नेहरु सम्मान, श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मृति सम्मान, श्री गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान, बचपना सम्मान

2&20 ls 40 **वर्ष के लिए:** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान, निर्भया सम्मान, पत्रकारश्री

3–40 **वर्ष से ऊपर के लिए:** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान, पत्रकार रत्न, समाज शिरोमणि, काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि

4-**सभी आयु वर्ग के लिए:** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान, **राष्ट्रभाषा सम्मान, राजभाषा सम्मान, शिक्षकश्री, विधिश्री**

5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमशः साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं.

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:

अंतिम तिथि: 15 fnlEcj 2020

laiknd dk;kZy;%
सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,
अनिल चक्की के सामने, लक्सों कंपनी के पहले, रामचन्द चन्द्र मिशन रोड,
मुंडेरा, धूमनगंज, इलाहाबाद (प्रयागराज)–211011, ईमेल: sahityaseva@rediffmail.com,
hindiseva15@gmail.com, 9335155949

कोरोना लाक डाउन में अपने पड़ोसियों का ध्यान अवश्य रखें. अगर कोई हमारा पड़ोसी भूखे सोया तो हमारा मानव धर्म हमें धिक्कारेगा।

&विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा जनहित में जारी

तृतीय लघु कथा प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 5000/रुपये मात्र

देश-विदेश का कोई भी लेखक इसमें प्रतिभाग कर सकता है. इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. आपको अपनी एक लघु कथा पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि लघु कथा 300 (तीन सौं) शब्दों से अधिक की न हो.

नियम एवं शर्तेः

1. रचना मौलिक होनी चाहिए. इसके लिए मौलिकता का प्रमाण देना आवश्यक होगा। किसी भी स्तर पर मौलिकता में कमी सिद्ध होने पर प्रतिभागिता रद्द कर दी जाएगी।
2. प्रतियोगिता तीन चरणों में होगी. प्रत्येक चरण के विजयी प्रतिभागियों को ह्वाट्स समूह, ई-मेल के माध्यम से जानकारी दी जाएगी.
3. प्रथम चरण के प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका एक वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
4. द्वितीय चरण के लिए चयनित प्रतिभागियों को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका दो वर्ष की सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
5. तृतीय एवं अंतिम चरण के लिए एक रचनाकार का चयन किया जाएगा. जिसे इलाहाबाद में आयोजित होने वाले साहित्य मेला में पुरस्कार राशि और प्रमाण पत्र स्वयं उपस्थित होकर ग्रहण करना होगा। विजेता को विश्व स्नेह समाज की मासिक पत्रिका पंचवर्षीय सदस्यता निःशुल्क दी जाएगी।
6. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये दो सौ पचास का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'सचिव विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद'**

बैंक का नाम : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद**

खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः ;chvkb,u 0553875

आवेदन की अंतिम तिथि 15 fnlEcj 2020

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान,

65ए/2, रामचन्द्र मिशन रोड, लक्सों कंपनी के सामने, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011, ह्वाटसएप नं०:

9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

* नियमों एवं शर्तो में आशिक परिवर्तन अनुमन्य होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा एकेडेमी प्रेस, से मुद्रित तथा एल. आई.जी. 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित।